मुद्रक—
इश्वरलाल जैन स्नातक
आनन्द प्रिंटिंग प्रेस,
गोपालजी का रास्ता,
जयपुर सिटी।



ग्रन्थमाला की पुस्तक मिलने का पता—
१—रतनचन्द कोचर
कुम्हीगरों के भैरू का रास्ता
जौहरी बाजार जयपुर सिटी
२—कान्तिलाल कालीदास शाह
नं० ३३ बड़तल्ला स्ट्रीट
कलकत्ता नं० ·

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

त्रिकाल-देववन्दन विधि

सामायिक पौषध विधि सहित

संग्रहकर्ता—

रतनचन्द कोचर

कुन्दीगरों के भैरूजी का रास्ता,
जौहरी बाजार, जयपुर।

प्रकाशक—

श्री जिनवाणी प्रचार ग्रन्थमाला,
जयपुर।

मूल्य बारह आना

वीर सं० २४७६	प्रथम संस्करण	वि० सं० २००७
आत्म सं० ५५	१०००	ई० सन् १९५०

दो शब्द

ग्रन्थमाला की तरफ से "त्रिकाल देव वन्दन विधि सामायिक पौषध विधि सहित" नामक पुस्तक भाई श्री रतनचन्दजी कोचर द्वारा संग्रह की हुई प्रकाशित कर रहे हैं। इस पुस्तक में सामायिक पौषध देववन्दन इत्यादि करने की क्रिया पूर्णरूप से लिखी गई है जिससे प्रत्येक सज्जन जिनको क्रिया विधि का सही ज्ञान नहीं हो सही तरीके से पार सकेगा। इस की आवश्यकता को हम कई दिन से अनुभव कर रहे थे, परन्तु कागज की कमी और सरकार द्वारा कागज पर नियन्त्रण होने से पुस्तक का प्रकाशन नहीं हो सका। हमारा विचार इस पुस्तक को अधिक से अधिक कॉपियां छापने का था परन्तु अधिक सहयोग न मिलने से फिलहाल थोड़ी ही पुस्तकें छाप रहे हैं। परन्तु अगर इसकी उपयोगिता सिद्ध हुई तो दूसरा संस्करण जल्दी ही प्रकाशित कर देंगे।

इस पुस्तक को संग्रह करने का श्रेय श्री भाई रतनचन्दजी कोचर को है। और इन्हीं के प्रसंग से ही श्रीमान् वाडीलाल जीवराज शाह पालनपुर निवासी ने अपना अमूल्य समय देकर पुस्तक की शुद्धि अशुद्धि ठीक की है तथा प्रस्तावना भी लिखी है जिसके लिये दोनों सज्जन हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं। साथ ही भाई ईश्वरलालजी जैन ने अपने "आनन्द प्रेस" में इसको छापने और इसके प्रूफ संशोधन इत्यादि में जो सहायता दी है उसके लिये हम उनकी सराहना करते हैं। हमें आशा है कि इस पुस्तक से सज्जनवृन्द लाभ उठाकर हमारे परिश्रम को सफल करेंगे।

इस पुस्तक में शुद्धियों का पूर्ण ध्यान रखते हुए भी दृष्टि दोष से या प्रमादवश कोई भूल चूक रह गई हो उनको सुधार कर पढ़ने की कृपा करें। इति शुभम्। विनीत—

प्रबन्धक—श्री जिनवाणी प्रचार ग्रन्थमाला, जयपुर।

❋ प्रस्तावना ❋

सर्वारिष्टप्रणाशाय, सर्वाभीष्टार्थदायिने ।
सर्वलब्धिनिधानाय, श्री गौतमस्वामिने नमः ॥

इस "त्रिकाल देववन्दन विधि–सामायिक पौषध विधि सहित" नाम की पुस्तिका "श्री जिनवाणी प्रचार ग्रन्थमाला" जयपुर की तरफ से प्रकाशित की जा रही है यह बड़े हर्ष की बात है। जो व्यक्ति विधि विधान के लिए रुचि तो रखता है लेकिन अनपठित होने के कारण या स्मृति के विस्मृत होने के कारण क्रिया नहीं कर सकता उसके लिये यह पुस्तक अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होगी, इसमें सन्देह नहीं।

गुजरात सौराष्ट्र में ऐसी पुस्तकें गुजराती भाषा में छपी जाती हैं किन्तु वे गुजराती भाषा भाषियों के लिये ही उपयोगी हैं लेकिन हिन्दी भाषा भाषियों के लिये ऐसी पुस्तिका की अत्यन्त आवश्यकता थी वे कमी अब इस "ग्रन्थमाला" की तरफ से प्रकाशित की हुई इस पुस्तिका से पूर्ण हो जायगी।

आगे से तो इस जड़वाद के जमाने में धर्म क्रिया के प्रति जो अभिरुचि होनी चाहिये वो कम होती जा रही है। जो क्रिया कर रहे हैं वे क्रिया का मर्म विशेष कम समझते हैं। परिणाम यह होता है कि क्रिया रस वृत्ति ज्यादा टकने में नहीं आती। आज तो एकान्त ज्ञान को

मानने वाले या एकान्त क्रियाकांडी बहुत मिलते हैं लेकिन वास्तव में ज्ञान के साथ २ क्रिया होने से ही उद्धार है। महान पूर्वधर श्री मद् उमास्वातिवाचक "तत्वार्थ सूत्र" में फरमाते हैं कि—

सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्ग —

ज्ञान क्रियाभ्या मोक्ष —जैसे समुद्र में तरने का ज्ञान तो है किन्तु हाथ पांव नहीं हिलाने से वह कभी पार उतर सकता है ? तात्पर्य कहने का यह है कि ज्ञान और क्रिया दोनों ही साथ में होने से ही आत्मोन्नति का जीव साधक बन सकता है।

मेरा ख्याल है कि इस छोटीसी पुस्तिका के लिये इसी प्रस्तावना क्यों ? लेकिन जो लोग ज्ञान के प्रति एकान्त ध्यान रखते हैं उनके लिये प्रथम क्रिया रुचि होने की आवश्यकता है और क्रिया रुचि होने के बाद जो विधि विधान से अनभिज्ञ हैं उनके लिये ऐसी पुस्तिका सहायतारूप होगी। ये किंचित बतलाने के लिये ज्यादा विवेचन किया गया है।

मुझे यह प्रस्तावना लिखने का जो अवसर दिया गया है उसके लिये "श्री जिनवाणी प्रचार ग्रन्थमाला" और मेरे दीर्घकालीन मित्र भाई रतनचन्दजी कोचर का आभारी हूं।

वि० स० २००७ आसाढ़ सुदा शुक्ल पंचमी गुरुवार ता० २० जुलाई सन् १९५०	भवदीय— वाडीलाल जीवराज शाह, पालनपुर (गुजरात)

(पौषध विधि)

जो श्राविक श्राविका पौषध करना चाहे उनको सुबह राइ प्रतिक्रमण करना चाहिये, पौषध करने में इस प्रकार धर्मादि उपकरण होने चाहिये-मुहपत्ति, चरवला, ऊनी आसन, शुद्ध धोती, उत्तरासन, मात्रा के लिये जाते समय पहनने की धोती, नाक साफ करने का रूमाल या खेदिया, सिर व बदन पर ओढ़ने के लिये कम्बल, सथारिया-सोने के लिये, डंडासण, गरम पानी, राख चूना पानी में डालने के लिए, सोते वक्त दोनों कानों के छेदों में जीव जंतु का जाना के लिए कुंडल याना रूई के दो फोहे।

श्रावक श्राविका पौषध लेने से पहिले शुद्ध वस्त्र पहन कर चौकी (बाजोठ) आदि उच्च स्थान पर पुस्तक जपमाला (नवकार वाली) आदि रखकर, जमीन पूंजकर, आसन बिछाकर, चरवला और मुहपत्ति लेकर बैठे। बैठ के बाँये हाथ में मुहपत्ति मुखके आगे रखकर दाहिने हाथ को स्थापन किये हुए पुस्तक आदि की स्थापना के सम्मुख करके नवकारमंत्र पढ़ें।

नमो अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं। नमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच नमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं ॥१॥

(ऐसे एक नवकार गिनकर)

पंचिंदियसंवरणो, तह नवविहबंभचेरगुत्तिधरो। चउविहकसायमुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥१॥ पंच महव्वयजुत्तो पंचविहायारपालणसमत्थो। पंचसमिओ तिगुत्तो, छत्तीसगुणो गुरु मज्झ ॥२॥

(ऐसे पंचिंदिय कहे, यदि प्रथमसे उस स्थान पर आचार्य प्रमुख की स्थापना की हुई हो तो यहां पंचिन्दिय नहीं कहना। पीछे)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडिक्कमामि? इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीविआओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए,

सुहुमेहिं अगमचालेहिं, सुहुमेहिं खेलमचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिमचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

(पीछे खमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पौषध मुहपत्ति पडिलेहुँ ? "इच्छं"

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना—पीछे खमासमण देना—)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पौषध संदिसाहुँ ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पौषध ठाऊं "इच्छं"

ऐसा कहकर दोनों हाथ जोडकर एक नवकार नीचे मुजब गिनना।

नमो अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं। नमो लोए सव्व साहूणं। एसो पंच नमुक्कारो। सव्व पावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं॥

[पीछे 'इच्छकारी भगवन पसाय करी पौषध दंडक उचरावोजी' ऐसे बोलकर निम्न पोसह दंडक स्वयं उच्चरें यदि गुरु या बडील हों तो वे उचरावें]

"करेमि भंते! पोसहं, आहार—पोसहं देसओ सव्वओ, सरीरसक्कार पोसहं सव्वओ, बंभचेर पोसहं सव्वओ, अव्वावार-पोसहं सव्वओ, चउव्विहं पोसहं ठामि। जावदिवस[1]

[1] सिर्फ दिनका पौषध करना हो तो 'जावदिवस' दिन रात का करना हो तो 'जाव अहोरत्तं' और सिर्फ रातका करना हो तो 'जावसेसदिवस अहोरत्तं' कहना चाहिये।

पञ्चुरामामि दुविह तिविहेण, मरोण वायाए कायेण न करेमि, न कारवेमि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ १ ॥"

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहु ? "इच्छं"

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलहना । पीछे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक संदिसाहु ?"इच्छं" । इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउ ? "इच्छं"

(ऐसे कहकर दोनों हाथ जोडकर एक नवकार नीचे मुजब गिनना)

नमो अरिहंताण । नमो सिद्धाण । नमो आयरिआण । नमो उवज्झायाण । नमो लोए सव्वसाहूण । एसो पंच नमुक्कारो । सव्व पावप्पणासणो । मंगलाण च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगल ॥

[पीछे 'इच्छकारी भगवन पसाय करी सामायिक दंडक उचरावोजी ऐसे बोलकर 'करेमि भंत' स्वयं उचर याद गुरु या बडील हो तो वे उचरावें]

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जाव पोसहं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

[पीछे]

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणे संदिसाहुं ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणे ठाउं ? "इच्छं" इच्छामि खमास मणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहुं ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करुं ? "इच्छं"

[फिर खड़े होकर दोनों हाथ जोड़कर तीन नवकार गुणना]

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बहुवेल*

---

* यदि पौषध में राइ प्रतिक्रमण करे तो अड्ढाईजेसु सूत्र पढ़ने के पूर्व दो खमासमण देकर बहुवेल संदिसाहुं और बहुवेल करेमि, का आदेश लें।

संदिसाहुँ ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छा कारेण संदिसह भगवन् ! बहुवेल करेमि ? "इच्छं"

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छा कारेण संदिसह भगवन् पडिलेहण करूं ? "इच्छं"

पीछे मुहपत्ति, चरवला, आसन, कंदोरा, (सूत की आगडी) और धोती, ये पांच चीजें पडिलेहे। बाद पडिलेहण की हुई धोती पहिन ले और उसके बाद— पुनः खमासमण देकर

अन्नत्थ उससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

(पीछे खमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पसाय करी पडिलेहणा पडिलेहावोजी ? "इच्छं"

ऐसा कहकर ब्रह्मचर्य व्रतधारी किसी बड़े के उत्तरासन की पडिलेहना करे। पीछे

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! उपधि मुहपत्ति पडिलेहुँ ? "इच्छं"

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलहना। पीछे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! उपधि संदिसाहुँ ? "इच्छं" । इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! उपधि पडिलेहुँ ? "इच्छं"

कहकर प्रथम पडिलेहन से बाकी रहे हुए उत्तरासन (दुपट्टा), मात्रा (पेशाब) करने जानेका वस्त्र और रात्रि-पौषध करना हो तो संथारिया, कम्बल वगैरह वस्त्र पडिलेहे। पीछे डंडासण लेकर पडिलेहण करके फिर—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ! इच्छं इच्छामि पडिक्कमिऊं, इरियावहियाए, विराहणाए । गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्ग ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं भाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, यह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते

कित्तइस्स, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

पूजा करता निकाल उसको दगना और उसमें सचित्त एकेन्द्रिय जीव का कलेवर निकले तो गुरु से आलोयणा लेना और त्रस जीव निकलें तो उसकी रक्षा हो वहां रखना और स्थापनाचार्य के सामने उसी जगह खड़े होकर फिर—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडिक्कमामि इच्छं। इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए विराह-

गाए । गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, श्रोसा उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहिकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च

चउप्पर पट ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंत, सीअल सिज्जंस वासुपुज्ज च । विमलमणंत च जिणं, धम्म संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउ वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

बाद में तीन जगह "अणुजाणह जस्सुग्गहो" यह वाक्य परलखना (डालना) और "निसिहि" तीन दफ यह फिर पहिले की जगह आकर संवर का देव वन्दन करना सो इसी पुस्तक में है।

बाद में जब वह नहीं दिन चढ़ तब पऊण पोरिसी पढे।

पऊण-पोरिसी की विधि

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बहुपडिपुण्णा पोरिसी ? इच्छं

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउं,

हरियाविहियाए विराहणाए। गमणागमणे पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग-पणग दग मट्टी मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं। तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठी संचालेहिं, एवमाईएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

[एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करना काउस्सग्ग पारके प्रगट लोगस्स कहना]

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च

चदप्पहं वंद ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंत, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथु अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउ-वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पडिलेहण करूं ? "इच्छं"

ऐसे कह कर मुहपति पडिलेहना । पीछे गुरु महाराज हो तो उनको विधि सहित वन्दना करना, यदि गुरु महाराज पे सार राइ प्रति क्रमण न किया हो तो गुरु वन्दन इस प्रकार करे ।

★ गुरु वंदन ★

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि "इच्छं" । इच्छामि पडिकमिउं, इरियावहियाए, विरा

हरियाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठी संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

[एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करना काउस्सग्ग पारके प्रगट लोगस्स कहना]

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च

चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! राइ मुहपत्ति पडिलेहुं? "इच्छं"

(मुहपत्ति पडिलेहकर नीचे मुजब द्वादशावर्त वंदना देवे)

सुगुरुवंदना सूत्र

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहोकायं काय-संफासं, खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे राइअवइक्कंतो? जत्ता मे? जवणिज्जं च मे? खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कमं, आवस्सिआए पडिक्कमामि, खमासमणाणं, राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, ज

किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए सव्व मिच्छोवयाराए सव्व धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ (फिर)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए । अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं बहु-सुभेण मे, राइअवइक्कंतो ? जत्ता मे जवणिज्जं च मे खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं, राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालियाए सव्व मिच्छोवयाराए सव्व धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् राइअ आलोउं ? 'इच्छं' आलोएमि । जो मे राइओ अइआरो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए ।

तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

सव्वस्सवि राइअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । "इच्छं" तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(पन्यास आदि पदस्थ हों तो ऊपर मुजब दो वांदणा देना और पदस्थ न हों तो एक खमासमण देकर)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । "इच्छकारि सुहराइ सुखतप शरीर निराबाध सुखसंयम यात्रा निर्वहते होजी । स्वामी शाता हैजी भात पाणी का लाभ देनाजी ।"

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

खमासमण देकर खड़ा होवे और दोनों हाथ जोड़कर —

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर राइयं* खामेउं ? "इच्छं खामेमि राइयं" जंकिंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे

*धारा यने पीछे जहां "राइय" बोलना लिखा है वहां "देवसि" बोलना ।

सलावे उचासणे समासणे अतरभासाए उवरिभासाए जंकिंचि मज्झ विणय परिहीण सुहुम वा बायर वा तुब्भे जाणह अह न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि आए मत्थएण वंदामि ॥ "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पसायकरी पच्चक्खाण का आदेश दीजियेजी ।

(जो पच्चक्खाण करना हो वो लेना ।)

एगासण तथा एकलठाणा* का पचक्खाण,

उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं, पोरिसिं, साढपोरिसिं, मुट्ठिसहियं, पचक्खाइ । उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहार-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसा-गारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं साहुवयणेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं । एगासणं पचक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुचमक्खिएणं, पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं । एगासणं

---

* एकलठाने के पचक्खाणमें 'आउंटणपसारणेणं' इतना पाठ छोड़कर और सब पाठ एगासणके पचक्खाणका ही बोलना चाहिये । एकलठाने में मुंह और दाहिने हाथके सिवा अन्य किसी अंगको नहीं हिलाना चाहिये और जीम कर उसी जगह चउव्विहार कर लेना चाहिये ।

पच्चक्खाइ, तिविहंपि आहार—असण, खाइम, साइम, अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, सागारियागारेण, आउंटणपसारेण, गुरु अब्भुट्ठाणेण, पारिट्ठावणियागारेण, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेण, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरइ।

आयंबिल पच्चक्खाण

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साड्ढपोरिसिं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ। उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहार—असणं, पाणं, खाइम, साइम, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेण, पच्छन्नकालेण, दिसामोहेण, साहुवयणेण, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेण। आयंबिल पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, लेवालेवेण, गिहत्थसंसट्ठेण, उक्खित्त विवेगेण, पारिट्ठावणियागारेण, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेण, एगासणं पच्चक्खाइ, तिविहंपि आहार—असणं, खाइमं, साइम, अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेणं, सागारियागारेण, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेण, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेण, पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरइ।

तिविहार उपवास—पच्चक्खाण

सूरे उग्गए, अब्भत्तट्ठ पच्चक्खाइ। तिविहंपि आहारं-असणं, खाइम, साइम, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिया गारेणं। पाणहार पोरिसिं, साढपोरिसिं, मुट्ठिसहियं पच्चक्खाइः अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरइ।

चउविहार उपवास-पच्चक्खाण

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठ पच्चक्खाइ। चउविहंपि आहार-असणं, पाणं, खाइम, साइम, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

★ देव दर्शन विधि ★

पौषध लेने के पीछे श्री जिन मन्दिरजी में दर्शन करने को जरूर जाना चाहिये। इस वास्ते आसन को दायें कंधे पर रखना, उत्तरासण करना, चरवला डावीं बगल में और मुहपत्ति दाहिने हाथ में रखना, काल का वक्त हो तो कमली ओढ़ना, और उपाश्रय (पौषधशाला) में से निकलते हुए तीनवार "आवस्सहि" कहके मौन पने इरियासमिति (जीवजतु) देखते हुए श्री जिन मन्दिरजी में जाए। वहा तीन वार "निसीहि" कह करके। मूल नायकजी के सन्मुख होकर दूर से प्रणाम करके तीन प्रदक्षिणा देवे। पीछे रंग मंडप में प्रवेश कर दर्शन, स्तुति करे—

॥ दर्शन स्तुति ॥

दर्शनं देव देवस्य, दर्शनं पापनाशनम् ।
दर्शनं स्वर्ग सोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम् ॥१॥
दर्शनाद् दुरित ध्वंसी, वन्दनात् वाञ्छितप्रद ।
पूजनात् पूरक श्रीणां, जिन साक्षात् सुरद्रुम ॥२॥
त्रिजग नायक तु धणी, मही मरोटो महाराज,
मोटे पुण्ये पामियो, तुम दरिसण हूँ आज ॥३॥
आज मनोरथ सवि फल्या, प्रगट्या पुण्यकल्लोल,
पाप कर्म दूरे टल्या, नाठा दुःख दंदोल ॥४॥
ज्ञानावरणीय क्षय करी, दर्शनावरणीय कर्म,
वेदनीय कर्म दूरे करी, टाल्यु मोहनीय कर्म ॥५॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ! इच्छं इच्छामि पडिक्कमिऊं, इरियावहियाए, विराहणाए । गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग-पणग-दग मट्टी-मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, [illegible]
ठाणाओ ठाणं संकामिया, [illegible] ववरोविया तस्स [illegible]

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहिकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय–

नदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभ, समाहिवरमुत्तम दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

(इस प्रकार तीन खमासमण देकर—)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करू ? "इच्छं"

सकलकुशलवल्लि, पुष्करावर्तमेघो ॥
दुरिततिमिरभानु, कल्प-वृक्षोपमान ॥१॥
भवजल निधिपोत सर्व सम्पत्ति हेतु ॥
स भवतु सततं व श्रेयसे शान्तिनाथ
—श्रेयसे पार्श्वनाथ ॥२॥

॥ चैत्यवन्दन ॥

आज देव अरिहन्त नमूं, समरु तोरा नाम ।
ज्यां ज्यां प्रतिमा जिनतणी, त्यां त्यां करूं प्रणाम ॥१
शत्रुञ्जय श्री आदि देव, नेम नमूं गिरनार ।
तारंगे श्री अजितनाथ, आबू ऋषभ जुहार ॥२
अष्टापद गिरि उपरे, जिन चोवीसी जोय ।
मणिमय मूरति मानसूं, भरते भरावी सोय ॥३॥

समेत शिखर तीरथ वडा, ज्या वीसे जिन पाय।
वैभारऊ गिरि ऊपरे, श्री वीर जिनेश्वर राय ॥४॥
माडवगढ़ नो राजियो, नामे देव सुवास।
ऋषभ कहे जिन समरतां, पहुंचे मन की आस ॥५॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए।
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥१॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥९॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

जावंति चेइयाइं, उड्ढेअ अहे अ तिरिय लोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाण ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

श्री ऋषभदेवजी का स्तवन।

जग जीवन जग वहालो हो, मारु देवीनो नंदलाल रे।
मुख दीठे सुख उपने, दर्शन अति ही आणंद लालरे ॥१॥
आंखडी अंबुज पांखडी, अष्टमी शमी सम भल लालरे।
वदन ते शारद चंदलो, वाणी अतिरसाल लालरे ॥२॥
लक्षण अंगे विराजता, अडहीय सहस उदार लालरे।
रेखा कर चरणा दिके, अभिंतर नहीं पार लालरे ॥३॥
इंद्र चन्द्र रवि गिरितणा, गुण लइ घडीयु अंग लालरे।
भाग्य किया थकी आवीयु, अचिरज एह उत्तंग लालरे ॥४॥
गुण सघला अंगे कर्या, दूर कर्या सवी दोष लालरे।
वाचक जश विजये थुणयो, देजो सुखनो पोष लालरे ॥५॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं। विसहर विसनिन्नासं, मंगलकल्लाण-आवासं ॥१॥ विसहर फुलिंगमंतं,

कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इय संथुओ महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हियएण। ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ॥५॥

(अब दोनों हाथ जोड़कर जय वीअराय कहना)

जय वीअराय ! जगगुरु !, होउ मम तुह पभावओ भयवं ! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धि ॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च। सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥२॥ वारिज्जइ जइ वि नियाणबंधणं वीयराय तुह समए। तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥ दुक्खखओ कम्मखओ, समाहिमरणं च बोहिलाभो अ। संपज्जउ मह एअं, तुह नाह पणाम करणेणं ॥४॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम्। प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति शासनम् ॥५॥

अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभ वत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सिद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(यहां एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्य" कह कर थुइ कहना)—

आदि जिनवर राया जास सोवन काया,
मरुदेवी माया, धोरी लंछन पाया।
जगत स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया,
केवल सिरीराया मोक्ष नगरी सिधाया ॥१॥

फिर प्रभु के सन्मुख पचक्खाण करना, पीछे जिन मन्दिर जी से निकलते हुवे तीन दफे "आवस्सहि" कहना और उपाश्रय में तीन दफे "निसीहि" कह कर प्रवेश करना और १०० पावंडे भूमि से आगे गया हो तो इरियावहि करे—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ?

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! [illegible] पडिक्कमामि! इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं, [illegible] विराह-

णाए , गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग-पणग दग मट्टी मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहिकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थियरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च

चदप्पह वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंत, सीयल सिज्जंस वासुपुज्ज च । विमलमणत च जिण, धम्म संतिं च वदामि ॥३॥ कुंथुं अर च मल्लिं, वंद मुणिसुव्वय नमिजिण च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पास तह वद्धमाण च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीस पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तियवंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभ, समाहिवरमुत्तम दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! गमणागमणे *आलोउं ? "इच्छं"

इरिया समिति, भाषा समिति एषणा समिति, आदान भंड मत्त निक्षेपणा समिति, पारिठापनिका समिति, मन गुप्ति, वचन गुप्ति, काय गुप्ति, ये पांच समिति, तीन गुप्ति, आठ प्रवचन माता श्रावकके धर्म, सामायिक पोसह लीधे, अच्छी रीति से पाली नहीं, खंडन विराधना

---

*पोषध करने के बाद अगर रात्रि प्रति क्रमण करे तो यहां सात लाख, अठारा पापस्थान की आलोयणा आने [illegible] बदले [illegible] कहना, [illegible] कहना।

हुई होय, ते सविहु मन वचन काया ए करी मिच्छामि दुक्कड ॥

(इसके पश्चात दोपहर में देववंदन करना चाहिए जो इस पुस्तक में आगे दिया हुआ है इस में सज्झाय न बोले। देववंदन अकाल में (११॥ बजे से १२॥ बजे तक) न करें। यदि वर्षा ऋतु (आषाढ सुदी १४ से कार्तिक सुदी १४ तक) में दोपहर के देववंदन से पहिले भूमि प्रमार्जन करना आवश्यक है, इन दिनों में तीन बार पहिले भूमि प्रमार्जन करना चाहिए। उसकी विधि इसी पुस्तक के पृष्ठ १७ की १८ वीं पंक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ २१ की १२ पंक्ति तक दिया है उसके अनुसार करें।

पचक्खाण पारने की विधि

एगासणा, एकलठाणा, आयंबील, आदि तिविहार उपवास के व्रत का पच्चक्खाण पारना होवो निम्न प्रकार से किया करें। परन्तु मे पाहले वा देववन्दन करके पचक्खाण पारे।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ! इच्छं इच्छामि पडिकमिऊं, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिं-

दिया, पत्तिग्यिा, अभिहया वत्तिया, लेसिया, सघाइया, सघट्टिया परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओठाण सकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कड ।

तस्स उत्तरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण विसोहिकरणेण, विसल्लीकरणेण, पावाण कम्माण निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्ग ॥

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएण, खासिएण, छीएण, जभाइएण, उड्डुएण, वायनिसग्गेण, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहताण भगवताण, नमुक्कारेण न पारेमि ताव काय ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि ।

(यहा एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे, प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थियरे जिणे । अरिहत कित्तइस्स, चउवीस पि केवली ॥१॥ उसभमजिअ च वदे, सभवमभिणदण च सुमइ च । पउमप्पह सुपास, जिण च चदप्पह वदे ॥२॥ सुविहि च पुप्फदत, सीअल सिज्जस वासुपुज्ज च । विमलमणत च जिण, धम्म सति च वदामि ॥३॥ कुथु अर च मल्लि, वदे मुणिसुव्वय नमि

निण च ॥ वदामि रिट्ठनेमिं, पास तह वद्धमाणं च ॥४॥
एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउ-
वीस पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-
वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबो
हिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा,
आइचेसु अहिय पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं
मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वंदामि ॥

(खमासमणा देकर—)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करूं ?
"इच्छं"

जगचिंतामणि चैत्यवंदन

जगचिन्तामणि जगनाह, जगगुरु जगरक्खण, जगबंधव
जगसत्थवाह, जगभावविअक्खण, अट्ठावयसंठविअरूव,
कम्मट्ठविणासण, चउवीसंपि जिणवर जयन्तु, अप्पडिहय-
सासण ॥१॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढमसंघयणि,
उक्कोसय सत्तरिसय, जिणवराण विहरंत लब्भइ। नव-
कोडिहिं केवलीण, कोडीसहस्स नव साहु गम्मइ। संपइ
जिणवर वीस मुणि, बिहुंकोडिहिं वरनाण, समणह कोडी-
सहस दुअ, थुणिज्जइ निच्च विहाणि ॥२॥ जयउ सामिय

जयउ सामिय रिसह सत्तुंजि, उज्जिंत पहु [illegible]
जयउ वीर सच्चउरिमंडण, भरुअच्छहिं [illegible]
पास दुहदुरियखंडण, अवरविदेहिं तित्थयरा, [illegible]
विदिसि जिं के वि तीआणागयसंपइअ वंदुं जिण [illegible]
॥३॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ [illegible]
बत्तिसय बासियाइं, तिअलोए चेइए वंदे [illegible]
कोडिसयाइं, कोडि बायाल लक्ख अडवन्ना [illegible]
असिइं (असियाइं), सासयबिंबाइं पणमामि [illegible]

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि [illegible]
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि [illegible]

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं [illegible]

धेय, ठाण मपत्ताण, नमो जिणाण, जिअभयाण ॥९॥
जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भविस्सतिणागए काले।
संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

जावंति चेइआइ, उड्ढेअ अहे अ तिरिअ लोए अ ।
सव्वाइ ताइ वंदे, इह संतो तत्थ संताइ ॥१॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि आए मत्थएण वंदामि ॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य ॥

उवसग्गहर पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्क । विसहर-विसनिन्नासं, मंगलकल्लाण आवास ॥१॥ विसहर फुलिंगमंत, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसाम ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ । नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इय संथुओ महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण । ता देव दिज्जबोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ॥५॥

(अब दोनों हाथ जोडकर जय वीयराय कहना)

जय वीयराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ

भयर ! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धि ॥१॥ लोगविरुद्धचाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥२॥ वारिज्जइ जइ वि नियाणं बंधणं वीयराय तुह समए । तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥ दुक्खखओ कम्मखओ, समाहिमरणं च बोहिलाभो अ । संपज्जउ मह एअं, तुहनाह पणाम करणेणं ॥४॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति शासनम् ॥५॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ? इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करूँ ?" "इच्छं"

(एक नवकार नीचे मुजब गिनना)

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच नमुक्कारो । सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥१॥

फिर मन्नह जिणाणं सज्झाय निम्न प्रकार से कहना—

अथ मन्नह जिणाणं सज्झाय ।

मन्नह जिणाणमाणं, मिच्छं परिहरह धरह सम्मत्तं ।
छव्विह आवस्सयम्मि, उज्जुत्तो होइ पइदिवसं ॥ १ ॥
पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो अ भावो अ ।

सज्झाय नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ ॥ २ ॥
जिणपूया जिणथुणणं, गुरुथुय साहम्मिआण वच्छल्लं।
ववहारस्स य सुद्धी, रहजत्ता तित्थजत्ता य ॥ ३ ॥
उवसम विवेग संवर, भासासमिई छजीव करुणा य ।
धम्मिअजणसंसग्गो करणदमो चरणपरिणामो ॥ ४ ॥
संघोवरि बहुमाणो, पुत्थयलिहणं पभावणा तित्थे ।
सड्ढाण किच्चमेअं, निच्चं सुगुरूवएसेणं ॥ ५ ॥इति॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पच्चक्खाण मुहपत्ति पडिलेहुं ?

(ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहना—पीछे खमासमण देना—)

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ? इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पच्चक्खाण पारूं ? 'यथाशक्ति'

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ? इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पच्चक्खाण पारा "तहत्ति"

(ऐसे कहकर दाहिने हाथको चरवल पर रखकर मस्तक झुकाकर एक नवकार मन गिनकर जो पच्चक्खाण किया हो उस नाम से यह इस माफिक पारना—)

उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं पोरिसिं साड्ढपोरिसिं

पुरिमड्ढ गठिमहिय मुट्ठिसहिय पच्चक्खाण किया चउ-विह आहार, आयंबिल निवि एकासना किया तिविह आहार, पच्चक्खाण फासिय पालिअ सोहिअ तीरिय किट्टिअ आराहिअ ज च न आराहिअ तस्स मिच्छामि दुक्कड।

(एक नवकार गिनना अगर तिविहार उपवास हो तो उसे नीचे माफिक बोलना—)

सूरे उग्गए उपवास किया तिविहआहार पोरिसिं साढपोरिसिं पुरिमड्ढ मुट्ठिसहिय पच्चक्खाण किया, फासिअ पालिअ सोहिअ तीरिय किट्टिय आराहिअ ज च न आराहिअ तस्स मिच्छामि दुक्कड।

एक नवकार गिनना चउविहार उपवास वाले को पच्चक्खाण पारने की जरूरत नहीं होती।

पोषध मे एगासण करने की विधि।

पच्चक्खाण पारने के बाद पानी पीना हो तो मांगा हुआ अचित जल बैठके पर बैठकर पीना और जिस बरतन से पानी पिया हो उसको पूछकर रखना। पानी के बरतन को उघाडा नहीं रखना। आयंबिल, नीवी, या एगासणा करने अपने घर जाना हो तो इरियासमिति सोधते (यानी रास्ते मे जीवजन्तु देखते हुवे) जाना और घर मे प्रवेश करते 'जयणा मंगल' शब्द बोलना और बैठना (आसन) बिछा बैठकर, स्थापना स्थापन कर "इरियावहि पडिक्कम" कर खमासमण देकर "गमणा गमणे" आलोयनी, और खाना लेकर पाटिया, थाली वगैरा बरतन व

मुँह पूंछ कर (प्रमार्जन कर) हो सके जब तक मुनि महाराज को वोहरा कर निश्चल (स्थिर) आसन से मौन रख आहार करना, झेठा नहीं डालना और थाली धोकर पीना, बगैर कारण स्वादिष्ट आहार और लविंगादि तांबुल (मुखवास) न लेना और मुख शुद्ध कर दिवस चरिम तिविहार का पच्चक्खाण करना और जिसको घर न जाना हो, वह पहले पुत्र नौकरादि को कहा हो उसका लाया हुआ आहार ऊपर लिखि विधि से पौषधशाला में ही करे और फिर बाद पौषधशाला में आकर "इरियावहि पडिक्कम" कर (सो पावड हो तो गमणागमणे आलोय कर) पुनः जगचिंतामणि का चैत्यवंदन जयवीयराय तक करना।

पोषध मे पेशाब (मात्रा या स्थंडिल) जाने की विधि।

पेशाब व पाखाने जाने के वस्त्र पहनने या धोती पहनना, कामली का काल हो तो सिर व बदन पर कामली ओढ़नी, मुँहपत्ति कदोरे में रखनी, चरवला डावी बगल में रखना, रात का वक्त हो तो दंडासन से इरियासमिति सोधते चलना। पेशाब करना हो तो कूंडी पूंजकर उसमें पेशाब कर परठवन (पेशाब जमीन पर डालना) की जगह कूंडी रखनी, निर्जीव जगह देख "अणुजाणह जस्सुग्गो" कह कर पेशाब जमीन पर डालना, फिर कूंडी नीचे रख तीन दफे "वोसिरे" कहना और कूंडी अचित्त जल से धोकर उसके स्थान पर रख फिर अपने हाथ धोना।

पाखाने जाना हो तो निर्जीव जगह देख "अणुजाणह

जमुगो" कहकर पाखाने जाना और शुद्धि करके तीन दफ 'वोसिरे" कहना और वापिस आकर हाथ पग धोना और पाखाने की शङ्का दिनही को निवारण कर लेनी चाहिये क्योंकि रात्रि को पाखाने जाने में जीव जन्तु की जतना न रहने से बहुत दोष लागता है और जाना ही पड़े तो १०० हाथ जगह के अन्दर जाना, धोती बदलने बाद इरियावहि पडिक्कमना।

सिर्फ रात्रि के चार पहर का पौषध लेने की विधि।

रात्रि के चार पहर का पोषध लेने वाला को पडिलेहण और देववंदन की क्रिया दिन में ही करने की है जिसमें पौषध जल्दी शुरु करना चाहिये। उसकी विधि इसी पुस्तक के पृष्ठ ६ में से आरम्भ होकर पृष्ठ १५ की २ पंक्ति तक (बहुवेल करेमि? "इच्छं" तक) दिया है उसके अनुसार कर के बाद में शाम के पडिलेहण में इच्छामि० खमासमण देकर "पडिलेहण करूं? इच्छं" से शुरु कर। उसकी विधि इसी पुस्तक में आगे "पिछले पहर को पडिलेहण करने की विधि" में है, उसके अनुसार करें।

सुबह चार पहर का पौषध लिया हो और पीछे—
आठ पहर का पौषध लेने की विधि।

पिछले पहर को पडिलेहण करने की विधि में "गमणा-गमणे" आलोयकर, फिर इसी पुस्तक के पृष्ठ १० की ७ वीं पंक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ १५ की २ पंक्ति तक (बहुवेल करेमि? "इच्छं" तक) दिया है उसके अनुसार करे परन्तु "सज्झाय

करू" की जगह "सज्झाय में हूँ" कहना और तीन नवकार की जगह १ नवकार गिनना। फिर बाद में शाम के पडिलेहण में "इच्छामि० खमासमण देकर "पडिलेहण करू ?" "इच्छं" से शुरू करे। उसकी विधि इसी पुस्तक में आगे "पिछले पहर के पडिलेहण करने की विधि में है। उसके अनुसार करें।

पिछले पहर की पडिलेहण करने की विधि।

(मुनिराज ने स्थापनाचार्य की पडिलेहणा की हो उसके सामने छः घड़ी दिन रहे उस समय पडिलेहण करना स्थापनाचार्य की पडिलेहणा किये पहिले पडिलेहण नहीं होती।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बहुपडिपुण्णा पोरिसी ? "इच्छं"

(पुनः खमासमण देकर इसी पुस्तक के पृष्ठ ३७ के १८ वीं पंक्ति से प्रारम्भ करके पृष्ठ ४० की पंक्ति तक ("खमासमणो" आलोय तक) दिया है उसके अनुसार क्रिया करें। पीछे —

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पडिलेहण करू ? "इच्छं"

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पोषधशाला प्रमार्जु ? "इच्छं"

(वह उपवास वाला की मुहपत्ति, चरवला, आसन, पडिलेहना और एकासणादि करने वाला को कदोरा (सूत की नागडी) व धोती समेत पांच उपकरण पडिलेहन करके खमा समण देकर इरियावहि पडिक्कम करके)

इच्छामि खमासमणो वन्दिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पमाय करी पडिलेहणा पडिलेहावोजी ? "इच्छं"

ऐसा कहकर ब्रह्मचर्य व्रतधारी किसी बड़े के उत्तरासन की पडिलेहना कर । पीछे

इच्छामि खमासमणो वन्दिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! उपधि मुहपत्ति पडिलेहूँ ? "इच्छं"

ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना । पीछे

इच्छामि खमासमणो वन्दिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ? इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करूँ ?" "इच्छं"

एक नवकार पढकर "मन्नह जिणाणं" की सज्झाय उत्कट बैठ (खड घुटन बैठ) कर कहना ।

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं ।

नमो उवज्झायाण । नमो लोए सव्वसाहूण । एसो पच नमु-
क्कारो । सव्वपावप्पणासणो । मगलाण च सव्वेसिं पढम
हवइ मगल ॥१॥

अथ मन्नह जिणाण सज्झाय ।

मन्नह जिणाणमाण, मिच्छ परिहरह धरह सम्मत्त ।
छव्विह आवस्सयम्मि, उज्जुत्तो होइ पइदिवस ॥ १ ॥
पव्वेसु पोसहवय, दाण सील तवो अ भावो अ ।
सज्झाय नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ ॥ २ ॥
जिणपूआ जिणथुणण, गुरुथुय साहम्मिआण वच्छल्ल ।
ववहारस्स य सुद्धी, रहजत्ता तित्थजत्ता य ॥ ३ ॥
उवसम विवेग सवर, भासासमिई छजीव करुणा य ।
धम्मियजणससग्गो, करणदमो चरणपरिणामो ॥ ४ ॥
सघोवरि बहुमाणो, पुत्थयलिहण पभावणा तित्थे ।
सड्ढाण किच्चमेअ, निच्च सुगुरूवएसेण ॥ ५ ॥इति॥

(फिर भोजन किया हो तो द्वादशावर्त्त वन्दना देवे, इस
पुस्तक के पृष्ठ २४ की १५ वीं पक्ति से प्रारम्भ होकर पृष्ठ २८
की १६ पक्ति तक लिया है उसके अनुसार करे । और तिविहार
उपवास वाला सिर्फ खमासमण दे)

इच्छामि खमासमणो वदिउ जावणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वदामि ? इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !
पच्चक्खाण का आदेश दीजियेजी ।

ऐसा कहकर पाणहार का पचक्खाण करे ।%

पाणहार-पचक्खाण

पाणहार दिवसचरिमं पचक्खाइ । अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ? इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! उपधि संदिसाहुँ ? "इच्छं" । इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! उपधि पडिलेहुँ ? "इच्छं"

कहकर प्रथम पडिलहन से बाकी रहे हुए उत्तरासन (दुपट्ट) मात्रा (पेशाब) करने जाने का वस्त्र और रात्रि-पौषध करना हो तो संथारिया, कम्बल वगैरह वस्त्र पडिलहे । पीछे दंडासरा लेकर पडिलेहण करके फिर खमासमण देकर इरियावहि पडिक्कम करके कुडा कचरा निकाल उसकी विधि इसी पुस्तक के पृष्ठ १७ की १८ वीं पंक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ २१ की १७ वीं

%चउव्विहार-उपवास किया हो तो इस वक्त पचक्खाण करने की जरूरत नहीं है, परन्तु सुबह तिविहार का पचक्खाण किया हो और पानी न पिया हो तो इस वक्त चउव्विहार-उपवास का पचक्खाण करे । उसका पचक्खाण इस पुस्तक के पृष्ठ ३० में दिया है ।

पडि तर दिया है उसके अनुसार करें । पीछे देववन्दन करना, जो इस पुस्तक में आगे दिया हुआ है इस समय भी सज्झाय न बोले । जिसने आठ पहर का पोसह लिया हो या जिसने केवल रात्रि-पौषध किया हो वह देववंदन करके पीछे कुण्डल (कान में डालने के लिये रूई), डंडासन और रात्रि की शुचि के लिए चूना डाला हुआ अचित पानी याचना करके रखे । पीछे—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ! इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग-पणग दग-मट्टी मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहिकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए,

सुहुमेहिं अगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, यह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

(खमासमण देकर—)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! थंडिल पडिलेहुं ? "इच्छं"

ऐसा कहकर नीचे लिखे अनुसार चोबीस मांडले करें।

ये मंडल रात्रि में बड़ी नीति लघुनीति (पाखाना, पेशाब) वगैरा परठवने लायक जगह देखने (प्रति लेखन करने) के लिये हैं,

१ आघाडे आसन्ने उचारे पासवणे अणहियासे।
२ आघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे।
३ आघाडे मज्झे उचारे पासवणे अणहियासे।
४ आघाडे मज्झे पासवणे अणहियासे।
५ आघाडे दूरे उचारे पासवणे अणहियासे।
६ आघाडे दूरे पासवणे अणहियासे।

संथारा के पास की जगह इस माफिक छ मंडल करना —

१ आघाडे आसन्ने उचारे पासवणे अहियासे।
२ आघाडे आसन्ने पासवणे अहियासे।
३ आघाडे मज्झे उचारे पासवणे अहियासे।
४ आघाडे मज्झे पासवणे अहियासे।
५ आघाडे दूरे उचारे पासवणे अहियासे।
६ आघाडे दूरे पासवणे अहियासे।

उपासरे के बारने के अंदर की तरफ इस माफिक छ मंडल करना —

१ अणाघाडे आसन्ने उचारे पासवणे अणहियासे।
२ अणाघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे।

३ अणाघाडे मज्झे उचारे पासवणे अणहिआसे।
४ अणाघाडे मज्झे पासवणे अणहिआसे।
५ अणाघाडे दूर उचारे पासवणे अणहिआसे।
६ अणाघाडे दूर पासवणे अणहिआसे।
उपाश्रय के बारने के बाहर नजदीक रहकर छ मंडल करना —
१ अणाघाडे आसन्ने उचारे पासवणे अहिआसे।
२ अणाघाडे आसन्ने पासवणे अहिआसे।
३ अणाघाडे मज्झे उचारे पासवणे अहिआसे।
४ अणाघाडे मज्झे पासवणे अहिआसे।
५ अणाघाडे दूरे उचारे पासवणे अहिआसे।
६ अणाघाडे दूरे पासवणे अहिआसे।
उपाश्रय से सौ हाथ के अन्दर दूर रहकर छ मंडल करना —

इन मंडलों वाली जगह पहले से ही देख रखनी और मंडल स्थापनाजी के पास रहकर बोलते वक्त उन उन जगह पर दृष्टी का उपयोग (ध्यान) रखना।

२४ मंडल करने के बाद इरियावहि पडिकम कर चैत्यवन्दन के साथ देवसी या पाक्खिकादि (पक्खी वगैरा) प्रतिक्रमण करे।

सथारा पोरिसी पढ़ाने की विधि

यदि रात्रि-पौषध हो तो पडिकमण करने के बाद सथारा पोरिसी के समय तक स्वाध्याय, ध्यान, धर्म-चर्चा वगैरह करे। पीछे

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बहुपडिपुण्णा पोरिसी ? तहत्ति;

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडिक्कमामि! इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहिकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्का-

रेण न पारेमि ताव काय ठाणेण मोणेण, भाणेण अप्पाण वोसिरामि ।

(यहा एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, यह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंद, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउ-वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चहुपडिपुण्णा पोरिसी, राइयसंथारए ठामि ? "इच्छं"

ये कहकर चउक्साय का चैत्यवन्दन करें—

चउकमायपडिमल्लुल्लूरणु, दुज्नयमयणमाणमुसुमूरणू । सरसपिअगुवन्नु गयगामिउ, जयउ पासु भुवण त्तयसामिउ ॥१॥ जसु तणुकतिकडप्प सिणिद्धउ, सोहइ फणिमणिकिरणा लिद्धउ, न नवजलहरतडिल्लयलछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वछिउ ॥२॥

नमुत्थुण अरिहंताण भगवंताण ॥ १ ॥ आइगराण, तित्थयराण, सयसंबुद्धाण ॥२॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाण, पुरिसवरपुंडरीआण, पुरिसवरगंधहत्थीण ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाण, लोगहिआण, लोगपईवाण, लोगपज्जोअगराण ॥ ४ ॥ अभयदयाण, चक्खुदयाण, मग्गदयाण, सरणदयाण, बोहिदयाण ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसिआण, धम्मनायगाण, धम्मसारहीण, धम्मवरचाउरतचक्कवट्टीण ॥६॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराण, विअट्टछउमाण ॥७॥ जिणाण जावयाण, तिन्नाण तारयाण, बुद्धाण बोहयाण, मुत्ताण मोअगाण ॥८॥ सव्वन्नूण सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइनामधेयं, ठाण संपत्ताण, नमो जिणाण, जिअभयाण ॥६॥ जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भविस्सतिणागए काले। संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वदामि ॥१०॥

जावंति चेइआइ, उड्ढेअ अहे अ तिरिअ लोए अ । सव्वाइ ताइ वंदे, इह सतो तत्थ सताइ ॥१॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाण ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं। विसहर-विसनिन्नासं, मंगलकल्लाण-आवासं ॥१॥ विसहर फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं॥४॥इय संथुओ महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण। ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ॥५॥

(अब दोनों हाथ जोड़कर जय वीअराय कहना)

जय वीअराय ! जगगुरु !, होउ मम तुह पभावओ भयवं ! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धि ॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च। सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥२॥ वारिज्जइ जइ वि नियाणबंधणं वीअराय तुह समए। तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं॥३॥ दुक्खखओ कम्मखओ,

समाहिमरणं च बोहिलाभो अ । संपज्जउ मह एअं, तुह नाह पणाम करणेणं ॥४॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति शासनम् ॥५॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! राइय-संथारा सूत्र पढने के निमित्त मुहपत्ति पडिलेहूँ ? "इच्छं" ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहण कर संथारा पोरिसि का पाठ पढे ।

निसीहि, निसीहि, निसीहि, नमो खमासमणाणं गोयमाईणं महामुणीणं ।

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच नमुक्कारो । सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥१॥

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जाव पोसहं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अनुक्रम से ये तीनों पाठ तीन दफे बोलना ।)

अणुजाणह जिट्ठिज्जा !

अणुजाणह परमगुरु ! गुरुगुणरयणेहिं मंडियसरीरा । बहुपडिपुन्ना पोरिसि, राइयसंथारए ठामि ॥

अणुजाणह संथार, बाहुवहाणेणा वामपासेण ।
कुक्कुडिपायपसारण, अतरत पमज्जए भूमि ॥ २ ॥
संकोइय संडासा, उव्वट्टते अ कायपडिलेहा ।
दव्वाइउवयोग ऊसासनिरुभणालोए ॥ ३ ॥
जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ।
आहारमुवहिदेह, सव्व तिविहेण वोसिरिय ॥ ४ ॥

चत्तारि मगल—अरिहता मगल, सिद्धा मगल, साहूमगल, केवलिपन्नतो धम्मो मगल ॥ ५ ॥

चत्तारि लोगुत्तमा–अरिहता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलीपन्नतो धम्मो लोगुत्तमो ॥ ६ ॥

चत्तारि सरण पवज्जामि—अरिहंते सरण पवज्जामि, सिद्धे सरण पवज्जामि, साहू सरण पवज्जामि, केवलीपन्नत्त धम्म सरण पवज्जामि ॥ ७ ॥

पाणाइवायमलिअ, चोरिक्क मेहुण दविणमुच्छ ।
कोह माण माय, लोह पिज्ज तहा दोस ॥ ८ ॥
कलह अब्भक्खाण, पेसुन्न रइ-अरइ-समाउत्त ।
परपरिवाय माया-मोस मिच्छत्तसल्ल च ॥ ९ ॥
वोसिरसु इमाइ मुक्खमग्गसंसग्गविग्घभूयाइ ।
दुग्गइनिबंधणाइ, अट्ठारस पावठाणाइ ॥१०॥
एगोऽहं नत्थि मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सइ ।
एव अदीणमणसो, अप्पाणमणुसासइ ॥११॥

एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ ।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥१२॥
संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा ।
तम्हा संजोगसंबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥१३॥
अरिहंतो मम देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ।
जिणपन्नत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहिअं ॥१४॥
(यह १४ वीं गाथा तीन बार कहे, पीछे सात नवकार गुण कर नीचे की तीन गाथा कहे)
खमिअ खमाविअ मइ खमह, सव्वह जीवनिकाय ।
सिद्धह साख आलोयणह, मुज्झह वइर न भाव ॥१५॥
सव्वे जीवा कम्मवस, चउदहराज भमंत ।
ते मे सव्व खमाविआ, मुज्झवि तेह खमंत ॥१६॥
जं जं मणेण बद्धं, जं जं वाएण भासिअं पावं ।
जं जं कायेण कयं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥१७॥इति॥

रात्रि को पोरिसी पढाने के बाद जब तक निद्रा न आये तब तक स्वाध्याय ध्यान करे, संथारा दूसरे श्रावक के संथारे से कम से कम एक भत् वेंटी (एक बिलात दूर) बिछाना। बाद में रात्रि के आखरी प्रहर में उठकर राइ प्रतिक्रमण करना और सुबह स्थापनाचार्य जी का पडिलेहण और इरियावहि करने के बाद वस्त्र आदि का पडिलेहण करना उसकी विधि इसी पुस्तक के पृष्ठ १५ की ४ थी पंक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ २१ की १२ वीं पंक्ति तक दिया है उसके अनुसार करें। बाद देववदन, सज्झाय

करें यह पुस्तक में आगे दिया हुआ है। देव दर्शन, गुरु वंदन करके मन में हुवे छडामण, कुंडी, पाली वगैरा गृहस्थ को वापिस समलवा देना पीछे आठ पहर का तथा रात्रि का पौषध पारना।

आठ पहर के तथा रात्रि के पौषध पारने की विधि।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडिक्कमामि? इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहिकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं [illegible] हिज्जो

हूजन मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, यह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहुँ ?

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना—पीछे खमासमण देना—)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पोसह पारेमि ? 'यथाशक्ति'

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ? इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पोसह पारिअं 'तहत्ति'

(कहकर दाहिने हाथको चरवले पर रखकर मस्तक झुकाकर एक नवकार मन्त्र बोल फिर "सागर चंदो" की पोषध पारने की गाथा कहे —

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच नमुक्कारो । सव्व पावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलं ॥

"सागर चन्दो कामो, चन्दवडिंसो सुदंसणो धन्नो ।
जेसिं पोसह पडिमा, अखंडिआ जीविअंते वि ॥१॥
धन्ना सलाहणिज्जा, सुलसा आणंद कामदेवा य ।
जास पसंसइ भयवं, दढव्वयत्तं महावीरो ॥२॥

पोसह विधि से लिया विधि से पारा विधि करते जो कोई अविधि हुई हो वह सब मन वचन काया करके मिच्छामि दुक्कडं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ? इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहूँ ?

(ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहना—पीछे खमासमण देना—)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिअ पारेमि ? 'यथाशक्ति'

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिअ पारिअं 'तहत्ति'

(ऐसा कहकर दाहिने हाथ को चरवले पर रखकर मस्तक झुकाकर एक नवकार मंत्र पढ़कर 'सामाइयवयजुत्तो' सूत्र पढ़े)—

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्व साहूणं । एसो पंच नमुक्कारो । सव्व पावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलं ॥

सामाइयवयजुत्तो, जाव मणे होइ नियमसंजुत्तो । छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइअ जत्तिआ वारा ॥१॥ सामाइअंमि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा । एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥२॥

मैंने सामायिक विधिसे लिया, विधिसे पूर्ण किया, विधिमें जो कोई अविधि हुई हो तो मिच्छामि दुक्कडं ।

दस मनके, दस वचनके, बारह कायाके ये कुल बत्तीस दोषोंमें से कोई दोष लगा हो तो मिच्छामि दुक्कडं ।

दिन के चार पहर का पौषध पारने की विधि ।

देवसी या पाक्षिकादि (पक्खी वगैरा) प्रतिक्रमण करने के बाद पौषध पारने के पहिले मांगे हुए डंडासण कुंडी, पानी वगैरा गृहस्थ को वापिस सम्भला देना पीछे खमासमण देकर इरियावहि करके चउक्कसाय चैत्यवन्दन करें, उसकी विधि इसी पुस्तक के पृष्ठ ५८ की ४ थी पंक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ ६० की ३ री पंक्ति तक (जैन जयति शासनम् ॥४॥ तक) दिया है उसके अनुसार करें । बाद में खमासमण देकर पौषध पारने की मुहपत्ति पडिलेहन करें उसकी विधि इस पुस्तक के पृष्ठ ६६ की २१ वीं पंक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ ६६ की ४ थी पंक्ति तक दिया है उसके अनुसार पारें ।

❀ इति पौषध विधि समाप्त ❀





॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

॥ त्रिकाल-देववन्दन विधि ॥

(अथ देववन्दन)

देववदन करने वाले श्रावक श्राविका पहिले शुद्ध वस्त्र पहन कर चौकी (बाजोट) आदि उच्च स्थान पर पुस्तक जपमाला (नव कारवाली) आदि रखकर, जमीन पूजकर, आसन बिछाकर, चरवला और मुहपत्ति लेकर बैठे। बैठ के बाँये हाथ में मुहपत्ति मुख के आगे रखकर दाहिने हाथ को स्थापन किये हुए पुस्तक आदि की स्थापना के संमुख करके नवकारमंत्र पढ़ें।

नमो अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं। नमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच नमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥१॥

पंचिंदियसंवरणो, तह नवविहबंभचेरगुत्तिधरो। चउ-विहकसायमुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो॥१॥पंच मह-

व्वयगुत्तो पचविहायारपालणसमत्थो। पचसमिथो तिगुत्तो, छत्तीसगुणो गुरु मज्झ ॥२॥

(ऐसे पचिंदिय कहे, यदि प्रथम से उस स्थान पर आचार्य प्रमुख की स्थापना की हुई हो तो यहा पंचिदिय नहीं कहना। पीछे)

इच्छामि खमासमणो वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहिय पडिक्कमामि ! इच्छ इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी मक्कडासताणा सकमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया [illegible] सघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, [illegible] सकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स [illegible]।

तस्स उत्तरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण [illegible] निग्घायणट्ठाए, [illegible]

निसल्लीकरणेण, पावाण कम्माणं [illegible] काउस्सग्ग ॥

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएण, [illegible] जभाइएण, उड्डुएण, वायनिसग्गेण, [illegible] सुहुमेहिं अगसचालेहिं, सुहुमेहिं [illegible] दिट्ठिसचालेहिं, एवमाइएहिं [illegible]

हुज्न मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्का-
रेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं भाणेणं अप्पाणं
वोसिरामि ।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते
कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे,
संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च
चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस
वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च
वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-
जिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥
एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउ-
वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-
वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबो
हिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा,
आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं
मम दिसंतु ॥७॥

(अब उत्तरासन डालकर खमासमण देकर चैत्यवंदन करें)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
चैत्यवंदन करूं ? "इच्छं"

❀ चैत्यवंदन ❀

श्री शत्रुञ्जय सिद्धक्षेत्र, दीठ दुर्गति वारे ।
भाव धरीने जे चढे, तेने भव पार उतारे ॥१॥
अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीर्थनो राय ।
पूर्व नवाणु ऋषभदेव, ज्यां ठविया प्रभुपाय ॥२॥
सुरज कुंड सोहामणो, कवड़जक्ष अभिराम ।
नाभिराया कुल मंडणो, जिनवर करु प्रणाम ॥३॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ।
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥१॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयसंबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥९॥

जे अ अइया सिद्धा, जे अ भविस्सतिणागए काले।
संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

(अब दोनों हाथ जोड़कर जय वीयराय कहना)

जय वीयराय! जगगुरु!, होउ मम तुह पभावओ भयवं! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धि ॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च। सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥२॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवन्दन करूं? "इच्छं"

॥ चैत्यवन्दन ॥

श्री सीमंधर जगधणी, आ भरते आवो,
करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो ॥१॥
सकल भक्त तुमे धणी, एजो होवे अमनाथ,
भवोभव हुं छुं ताहरो, नहीं
सयल संग छंडी करी.
पाय तुमारा
ए अलगो
इहां

नमुत्थुण अरिहंताण भगवंताण। आइगराण तित्थयराण सयसंबुद्धाण। पुरिसुत्तमाण पुरिससीहाण पुरिस-वर पुंडरीआण पुरिसवर-गंधहत्थीण। लोगुत्तमाण लोगनाहाण लोगहिआण लोगपईवाण लोगपज्जोअगराण अभयदयाणं चक्खुदयाण मग्गदयाणं सरणदयाण बोहिदयाण धम्म-दयाण धम्मदेसयाण धम्मनायगाण धम्मसारहीण धम्मवर-चाउरंत चक्कवट्टीण, अप्पडिहयवरनाणदंसणधराण विअट्टछ-उमाण जिणाण जावयाण, तिनाण तारयाण, बुद्धाण बोहयाण, मुत्ताण मोअगाण सव्वन्नूण सव्वदरिसीण, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइ नामधेय ठाण संपत्ताण, नमो जिणाण जिअभयाण। जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

अरिहंतचेइआण करेमि काउस्सग्ग, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहि लाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्ग ॥

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएण, खासिएण, छीएण, जंभाइएण, उड्डुएणं, वायनिसग्गेण, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं-

दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्य" कहकर थुइ कहना—

कल्लाणकंद पढम जिणिंद, संति तओ नेमिजिणं मुणिंदं। पास पयास सुगुणिक्कठाणं, भत्तीइ वंदे सिरिवद्धमाणं ॥१॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं वंदण-वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्ति-आए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमु-क्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके प्रकट कल्लाणकन्द की दूसरी थुइ नीचे लिखे अनुसार कहना)

अपारसंसारसमुद्दपारं, पत्ता सिवं दिंतु सुइक्कसारं। सव्वे जिणिंदा सुरविंदवंदा, कल्लाणवल्लीण विसालकंदा ॥२॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे य जंबुदीवे य। भरहेरवय-विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥१॥ तम तिमिर-पडल विद्ध-संसणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स। सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिय मोहजालस्स ॥२॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण-पुक्खल विसाल-सुहावहस्स। को

धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमाय ॥३॥ सिद्धे भो ! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं । वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए । सद्धाए मेहाए धिइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग करके प्रकट 'कल्लाणकंद' की तीसरी थुइ कहना)

निव्वाणमग्गे वरजाणकप्पं, पणासियासेसकुवाइदप्पं । मयं जिणाणं सरणं बुहाणं, नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं ॥३॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं । लोअग्गमुवगयाणं नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाण वि

दवो, ज देवा पजली नमसति । त देवदेवमहिअ, सिरसा वद महावीर ॥३॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स । ससारसागराओ, तारेइ नर व नारिं वा ॥३॥ उज्जितसेलसिहरे, दिक्खानाण निसीहिआ जस्स । त धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमि नमसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस दो, य वदिया जिणवरा चउव्वीस । परमट्ठ निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसतु ॥५॥

वेयावच्चगराण सतिगराण सम्मदिट्ठिसमाहिगराण करेमि काउस्सग्ग ॥

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएण, खासिएण, छीएण, जभाइएण, उड्डुएण, वायनिसग्गेण, भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहताण भगवताण, नमुक्कारेण न पारेमि, ताव काय ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग पारकर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्य कहकर 'कल्लाणकद' की चौथी थुइ कहना)

कुदिदुगोक्खीरतुसारवन्ना, सरोजहत्था कमले निसन्ना वाएसिरी पुत्थयवग्गहत्था, सुहाय सा अम्ह सया पसत्था ॥४

नमुत्थुण अरिहंताण भगवंताण। आइगराण तित्थ-
यराण सयसंबुद्धाण। पुरिसुत्तमाण पुरिससीहाण पुरिस वर
पुंडरीआण पुरिसवर गंधहत्थीण। लोगुत्तमाण लोगनाहाण
लोगहिआण लोगपईवाण लोगपज्जोअगराण अभयदयाणं
चक्खुदयाण मग्गदयाण सरणदयाणं बोहिदयाण धम्म-
दयाण धम्मदेसयाण धम्मनायगाण धम्मसारहीण धम्मवर-
चाउरंत चक्कवट्टीण अप्पडिहयवरनाणदंसणधराण विअट्टछ-
उमाण जिणाण जावयाण, तिन्नाण तारयाण, बुद्धाण
बोहयाण, मुत्ताण मोअगाण सव्वन्नूण सव्वदरिसीण,
सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति,सिद्धिगइ
नामधेयं ठाण संपत्ताण, नमो जिणाण जिअभयाण।
जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइअ
वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

अरिहंतचेइआण करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए,
पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहि-
लाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए,
धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि
काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए,
सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं

ट्ठिमचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं भाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्य" कहकर थुइ कहना—

शंखेश्वर पासजी पूजीए, नरभवनो लाहो लीजीए;
मनवंछित पूरण सुरतरु, जय वामासुत अलवेसरु ॥१॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं, करेमि काउस्सग्गं वंदण-वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्ति-आए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिइए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ।

अनत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके दूसरी थुइ नीचे लिखे अनुसार कहना)

दोय राता जिनवर अति भला, दोय धोला जिनवर गुणनीला।
दोय नीला दोय शामल कह्या, सोले जिन कंचन वर्ण लह्या ॥२॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ । भरहेरवय-विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥१॥ तम तिमिर-पडल विद्धं सणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ मोहजालस्स ॥२॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण-पुक्खल विसाल-सुहावहस्स । को देवदाणवनरिंदगणच्चियस्स,

धम्मम्म सारहुवलंभ करे पमायं ॥३॥ सिद्धे भो ! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवनागसुवन्नकिन्नरगणस्स ब्भूयभावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चा सुर, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं । वंदणवत्तियाए, पूअण-वत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभव-त्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए । सद्धाए मेहाए धिइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमु-क्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारनो काउस्सग्ग तीसरी थुइ कहना)

आगम ते जिनवर भाखियो, गणधर ते हैडे राखियो, तेनो रस जेणे चाखियो, ते हुवो शिवसुख साखियो ॥३॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं । लोअग्ग-मुवगयाणं नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो ~

देवो, जं देवा पंजली नमंसंति । तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥२॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स । संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खानाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस दो, य वंदिया जिणवरा चउव्वीसं । परमट्ठ निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमु-क्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग पारकर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यो पाध्याय सर्वसाधुभ्य कहकर चौथी थुइ कहना)

धरणीधरराय पद्मावती, प्रभु पार्श्व तणा गुण गावती,
सहु संघना संकट चूरती, नय विमलनां वंछित पूरती ॥४॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयसंबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥९॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं । विसहर-विसनिन्नासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥१॥ विसहर फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुश्रो । तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ । नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इय संथुश्रो महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण । ता देव दिज्जबोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ॥५॥

॥ स्तवन ॥

प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए, जास सुगंधीरे काय ।
कल्पवृक्ष परे तास इंद्राणी नयन जे, भृंगपरे लपटाय ॥१॥
रोग उरग तुज नवि नडे, अमृत जे आस्वाद ।
तेहथी प्रतिहत तेह मानु कोई नवि करे, जगमां तुमशुं रे वाद ॥२॥
वगर धोई तुज निर्मली, काया कंचन वान ।
नहि प्रस्वेद लगार तार तुं तेहने, जे धरे ताहरुं ध्यान ॥३॥
राग गयो तुज मनथकी, तेहमां चित्र न कोय ।
रुधिर आमिपथी राग गयो तुज जन्मथी, दूध सहोदर होय ॥४॥
श्वासोच्छ्वास कमलसमो, तुज लोकोत्तर वाद ।
देखे न आहार निहार चर्मचक्षु धणी, एहवा तुज अवदात ॥५॥
चार अतिशय मूलथी, ओगणीश देवना कीध ।

कर्म खप्याथी अग्यार चोत्रीश एम अतिशया, समवायांगे प्रसिद्ध ६
जिन उत्तम गुण गावता, गुण आवे निज अंग ।
पद्मविजय कहे एह समय प्रभु पालजो, जेम थाउ अक्षय अभंग॥७॥

(अब दोनो हाथ जोड़कर जय वीयराय कहना)

जय वीयराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिया इट्ठफलसिद्धि ॥१॥ लोगविरुद्धचाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥२॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवन्दन करूं ? "इच्छं"

❀ चैत्यवन्दन ❀

जय चिंतामणि पार्श्वनाथ, जय त्रिभुवन स्वामी ।
अष्ट कर्म रिपु जीतीने, पंचम गति पामी ॥ १ ॥
प्रभु नामे आनंद कंद, सुख संपत्ति लहिये ।
प्रभु नामे भव भय तणा, पातक दुःख दहिये ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं वर्ण जोडी करी ए, जपीए पार्श्व नाम ।
विष अमृत थइ परिणमे, पामे अविचल ठाम ॥ ३ ॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ।
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥

नमुत्थुण अरिहंताण भगवंताण। आइगराण तित्थ-यराण सयमंसंबुद्धाण। पुरिसुत्तमाण पुरिससीहाण पुरिसवर पुंडरीयाण पुरिसवर गंधहत्थीण। लोगुत्तमाण लोगनाहाण लोगहियाण लोगपईवाण लोगपज्जोअगराण अभयदयाण चक्खुदयाण मग्गदयाण सरणदयाण बोहिदयाण धम्म-दयाण धम्मदेसयाण धम्मनायगाण धम्मसारहीण धम्मवर-चाउरंत चक्कवट्टीण अप्पडिहयवरनाणदंसणधराण विअट्टछ-उमाण जिणाण जावयाण, तिन्नाण तारयाण, बुद्धाण बोहयाण, मुत्ताण मोअगाण सव्वन्नूण सव्वदरिसीण, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइ नामधेयं ठाण संपत्ताण, नमो जिणाण जिअभयाण। जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि॥

(अब दोनों हाथ जोड़कर जय वीयराय कहना)

जय वीयराय! जगगुरु!, होउ मम तुह पभावओ भयवं! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धि ॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च। सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥२॥ वारिज्जइ जइ वि निआण बंधण वीयराय तुह समए। तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं॥३॥ दुक्खखओ कम्मखओ, समाहिमरण च बोहिलाभो अ। संपज्जउ महएअ, तुहनाह

पणाम करवोइ ॥४॥ सर्वमंगलमांगल्य, सर्वकल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति शासनम् ॥५॥

(पीछे)

विधि करते हुए कोई अविधि हुई हो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

—❀—

(सुबह के देववन्दन के अन्त में "मन्नहजिणाणं" की सज्झाय कहे । पहिले खमासमण देकर एक नवकार गिनकर फिर सज्झाय करना, मध्याह्न और सायंकाल में सज्झाय नहीं करना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करूं ? "इच्छं"

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच नमुक्कारो । सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥१॥

अथ मन्नह जिणाणं सज्झाय ।

मन्नह जिणाणमाणं, मिच्छं परिहरह धरह सम्मत्तं ।
छव्विह आवस्सयम्मि, उज्जुत्तो होइ पइदिवसं ॥ १ ॥
पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सील तवो अ भावो अ ।
सज्झाय नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ ॥ २ ॥

जिणपूआ जिणथुणणं, गुरुथुअ साहम्मिआण वच्छल्लं ।
ववहारस्स य सुद्धी, रहजत्ता तित्थजत्ता य ॥ ३ ॥
उवसम विवेग संवर, भासासमिई छजीव करुणा य ।
धम्मिअजणसंसग्गो, करणदमो चरणपरिणामो ॥ ४ ॥
संघोवरि बहुमाणो, पुत्थयलिहणं पभावणा तित्थे ।
सड्ढाण किच्चमेअं, निच्चं सुगुरूवएसेणं ॥ ५ ॥इति॥

-ॐ卐ॐ-

॥ श्री पर्युषण पर्व का चैत्यवन्दन ॥

पर्व पर्युषण गुणनीलो, नव कल्प विहार ।
चार मासांतर स्थिर रहे, एहीज अर्थ उदार ॥ १ ॥
आषाढ शुद चौदश थकी, संवत्सरी पचास ।
मुनिवर दिन सीत्तेरमे, पडिक्कमता चउमास ॥ २ ॥
श्रावक पण समता धरी, करे गुरुना बहुमान ।
कल्पसूत्र सुविहित मुखे, सांभले थई एकतान ॥ ३ ॥
जिनवर चैत्य जुहारीये, गुरुभक्ति विशाल ।
प्राये अष्ट भवांतरे, वरीये शिव वरमाल ॥ ४ ॥
दर्पणथी निज रूपनो, जुए सुदृष्टि रूप ।
दर्पण अनुभव अर्पणा, ज्ञान रमण मुनि भूप ॥ ५ ॥
आतमस्वरूप विलोकता, प्रगट्यो मित्र स्वभाव ।
राय उदायी खामणा, पर्व पर्युषण दाव ॥ ६ ॥
नव वखाण पूजी सुणो, शुक्ल चतुर्थी [illegible]

पचमी दिन वाचे सुणे, होय विरोधी नीभा ॥ ७ ॥
॥ नहीं पढ़े पचमी, मरे समाधी चोथ ।
भरभीरु मुनि मानसे, माण्यु अरिहा नाथे ॥ ८ ॥
श्रुत कराली वयणा सुणी, लही मानव अवतार ।
श्री शुभ वीरने शासने, पाम्या जय जयकार ॥ ९ ॥

॥ श्री वीस स्थानक का चैत्यवन्दन ॥

पहले पद अरिहत नमु, बीजे सव सिद्ध ।
त्रीजे प्रवचन मन धरो, आचारज सिद्ध ॥ १ ॥
नमो [१]थराण पाचमे, [२]पाठक गुण छट्ठे ।
नमो लोए सव्व साहूण, जे छे गुण गरिठ्ठे ॥ २ ॥
नमो नाणस्स आठमे, दर्शन पद व्यासो ।
विनय करो गुणवतनो, चारित्र मन भासो ॥ ३ ॥
नमो बभवय धारिण तेरम किरियाण ।
नमो तवस्स चौदमे, गोयम नमो जिणाण ॥ ४ ॥
[३]चारित्र [४]नाण [५]सुअस्सने ए, नमो तित्थस्स ...
जिन उत्तम पद पद्मने, नमता होय सुख ... ॥ ५ ॥

॥ दूज तिथि का चैत्यवन्दन ॥

दुविध धर्म जिणे उपदिश्यो, चौथा ... ।
बीज अनन्या ते प्रभु, भव दुख ... ॥ १ ॥

[१] स्थविर । [२] उपाध्याय । [३] ... । [४] ... । [५] ...
अथवा श्रुत-सिद्धान्त, जो ... ।

दुविध ध्यान तम परिहरी, आदरो दोय ध्यान ।
इम प्रकारयु सुमति जिने, ते चविया बीज दिन ॥ २ ॥
दोय बंधन राग द्वेष, तहने भवि तजीये ।
मुज परे शीतल जिन कहे, बीज दिन शिव भजीये ॥ ३ ॥
जीवाजीव पदार्थनु, करो नाण सुजाण ।
बीज दिने वासुपूज्य परे, लहो केवलनाण ॥ ४ ॥
निश्चय ने व्यवहार दोय, एकांते न ग्रहीये ।
अरजिन बीज दिने चवी, एम जन आगल कहीये ॥ ५ ॥
वर्तमान चोवीशीए, एम जिन कल्याण ।
बीज दिने केइ पामीया, प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥
एम अनंत चोवीशीए, हुआ बहु कल्याण ।
जिन उत्तम पद पद्मने, नमता होय सुख खाण ॥ ७ ॥

॥ पंचमी का चैत्यवन्दन ॥

त्रिगडे बेठा वीर जिन, भाखे भविजन आगे ।
त्रिकरणशु त्रिहुँ लोक जन, निसुणो मन रागे ॥ १ ॥
आराधो भली भातसें, पांचम अजुआली ।
ज्ञान आराधन कारणे, एहज तिथि निहाली ॥ २ ॥
ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो एणे संसार ।
ज्ञान आराधनथी लहे, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥
ज्ञान रहित क्रिया कही, काश कुसुम उपमान ।
लोकालोक प्रकाश कर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥

ज्ञानी श्वासोश्वासमा, करे कर्मनो छेह ।
पूर्व कोडी वरसा लगे, अज्ञानी करे तेह ॥ ५ ॥
दश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान ।
ज्ञान तणो महिमा घणो, अंग पांचमे भगवान ॥ ६ ॥
पंच मास लघु पंचमी, जावज्जीव उत्कृष्टी ।
पंच वरस पंच मासनी, पंचमी करो शुभ दृष्टि ॥ ७ ॥
एकावन ही पंचनो ए, काउस्सग्ग लोगस्स केरो ।
उजमणुं करो भावशुं, टालो भव फेरो ॥ ८ ॥
इणी पर पंचमी आराधीए, आणी भाव अपार ।
वरदत्त गुणमंजरी परे, रंगविजय लहो सार ॥ ९ ॥

॥ श्री अष्टमी चैत्यवन्दन ॥

माह शुदी आठम दिने विजया सुत जायो ।
तेम फागण शुदि आठमें, संभव चवी आव्यो ॥ १ ॥
चैत्र वदिनी आठमे, जन्म्या ऋषभ जिणंद ।
दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥
माधव शुदि आठम दिने, आठ कर्म कर्या दूर ।
अभिनंदन चोथा प्रभु, पाम्या सुख भरपूर ॥ ३ ॥
एहीज आठम उजली, जन्म्या सुमति जिणंद ।
आठ जाति कलशे करी, नवरावे सुर इंद ॥ ४ ॥
जन्म्या जेठ वदि आठमे, मुनिसुव्रत स्वामी ।
नेम अषाड शुदि आठमे, अष्टमी गति पामी ॥ ५ ॥
श्रावण-वदनी आठमे, नमि जन्म्या जग

तम आरण शुचि आठमे, पामतीलु निरवाण ॥ ६ ॥
भाद्रवा वदी आठम दिने, चविया स्वामी सुपास।
जिन उत्तम पद पद्मने, सेवाथी शिववास ॥ ७ ॥

॥ श्री एकादशी का चैत्यवन्दन ॥

शासन नायक वीरजी, प्रभु केवल पायो।
संघ चतुर्विध थापवा, महसेन वन आयो ॥ १ ॥
माधव सित एकादशी, सोमिल द्विज यज्ञ।
इन्द्रभूति आदि मल्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥
एकादशसें चउ गुणा, तेहनो परिवार।
वेद अर्थ अवलो करे, मन अभिमान अपार ॥ ३ ॥
जीवादिक संशय हरी, एकादश गणधार।
वीरे थाप्या वदीस, जिनशासन जयकार ॥ ४ ॥
मल्लि जन्म अर मल्लि पास, वर चरण विलासी।
ऋषभ अजित सुमति नमि, मल्लि घनघाती विनाशी ॥५॥
पद्मप्रभ शिव वास पास, भव-भवना तोडी।
एकादशी दिन आपणी, ऋद्धि सघली जोडी ॥ ६ ॥
दश क्षेत्रे त्रिहुँ कालना, त्रणसें कल्याण।
वरस अग्यार एकादशी, आराधो वर नाण ॥ ७ ॥
अगीयार अंग लखावीये, एकादश पाठा।
पुंजणी ठवणी वींटणी, मषी कागल ने काठा ॥ ८ ॥
अगीयार अव्रत छांडवा ए, वहो पडिमा अगीयार।

समाविजय जिनशासने, सफल करो अवतार ॥ ६ ॥

॥ सिद्धचक्रजी का चैत्यवन्दन ॥

पहले पद अरिहंतना, गुण गाओ नित्य ।
बीजे सिद्ध तणा घणा, समरो एक चित्ते ॥ १ ॥
आचारज त्रीजे पद, प्रणमो बिहुँ कर जोडी ।
नमीये श्रीउवज्झायने, चोथे मद मोडी ॥ २ ॥
पंचम पद सब साधुनु , नमता न आणो लाज ।
ए परमेष्ठी पदने, ध्याने अविचल राज ॥ ३ ॥
दंसण-शंकादिक रहित, पद छट्ठे धारो ।
सर्व नाण पद सातमे, क्षण एक न विसारो ॥ ४ ॥
चारित्र चोखुं चित्तथी, पद अष्टम जपीये ।
सकल भेद बीच दान-फल, तप नवमे तपीये ॥ ५ ॥
ए सिद्धचक्र आराधता, पूरे वंछित कोड ।
सुमतिविजय कविरायनो, राम कहे कर जोड ॥ ६ ॥

॥ दीवाली का चैत्यवन्दन ॥

सिद्धारथ नृप कुल-तिलो, त्रिशला जस मात ।
हरि लंछन तनु सात हाथ, महिमा विख्यात ॥ १ ॥
त्रीश वरस गृहवास छंडी, लिये संयम भार ।
बारा वरस छद्मस्थ मान, लही केवल सार ॥ २ ॥
त्रीश वरस इम सवि मली, बहोंतेर आयु प्रमाण ।
दीवाली दिन शिव गया, नय कहे ते गुण खाण ॥ ३ ॥

॥ श्री पर्युषण पर्व का स्तवन ॥

पुणजो साजन मत पजुसण आव्यार, तमे पुन्य करो पुन्यवंत,
भविक मन भाव्यारे, (आकणी)
वीर जिणेसर अति अलवेसर, वाहाला मारा परमेश्वर एम बोले रे
पर्व माहे पजुसण महोटा, अवर न आवे तम तोलेरे,
पजुसण आव्या रे, तमे० १
चउपद माहे जेम केसरि मोटो, वा० खगमा गरुड कहीए रे,
नदी माहे जेम गंगा महोटी, नगमा मेरु लहीए रे, प० २
भूपतिमा भरतेसर भाख्यो, वा० दवमाहे सुर इन्द्र रे,
तीरथमाँ शेत्रुञ्जो दाख्यो, ग्रहगणमा जेम चन्द्र रे, प० ३
दशरा दीवाली ने वली होली, वा० अखात्रीज दीवासो रे,
बलेव प्रमुख बहुला छे बीजा, पण नहीं मुक्तिनो वासो रे प ४
ते माटे तम अमर पलावो, वा० अट्ठाइ महोत्सव कीजे रे,
अट्ठम तप अधिकाइए करीने, नरभव लाहो लीजे रे, प० ५
ढोल ददामा भेरी नफेरी, वा० कल्पसूत्र ने जगावो रे,
झांझरना झमकार करीने, गोरीनी टोली मली आवोरे, प० ६
सोना रूपाने फूलडे वधावो, वा० कल्पसूत्रने पूजो रे,
नव वखाण विधिए सांभलता, पाप मेवासी धूजे रे, प० ७
एम अट्ठाईनो महोत्सव करता वा० बहु जीव जग उद्धरियारे,
विबुध विमलवर सेवक एहथी, नवनिधि ऋद्धि सिद्धि
वरियारे, प० ८

सम ल्गो स्वाद, जीवने संतोष रस कीजिये जी ॥१०॥ जी० बीज करो दोय मास, उत्कृष्टी बावीश मासनी जी। जी० चोविहार उपवास, पालिये शील वसुधासनी जी ॥११॥ जी० आवश्यक दोय वार पडिलेहण दोय कीजिये जी। जी० देववदन त्रण काल, मन वच कायाए कीजिये जी ॥१२॥ जी० उत्तमणु शुभ चित्त, करी धरिये सयोगथी जी। जी० जिनवाणी रस एम, पीजिये श्रुत उपयोगथी जी ॥१३॥ जी० इण विधि करिये हो बीज, राग ने द्वेष दूरे करी जी। जी० केवलपद लही ताम, वरे मुक्ति उलठ धरी जी ॥१४॥ जी० जिनपूजा गुरुभक्ति, विनय करी सेवो सदा जी। जी० पद्मविजयनो शिष्य, भक्ति पामे सुख संपदा जी ॥१५॥

॥ ज्ञानपंचमी का स्तवन ॥

सुत सिद्धारथ भूपनो रे, सिद्धारथ भगवान। बारह परखदा आगले रे, भाखे श्री वर्धमानो रे, भवियण चित्त धरो, मन वच काय अमायो रे, ज्ञान भक्ति करो ॥ ए आंकणी॥१॥ गुण अनन्त आतम तणा रे, मुख्यपणे तिहां दोय। तेहमां पण ज्ञानज बडु रे, जिणथी दरसण होय रे, भ०॥२॥ज्ञाने चारित्र गुण वधे रे, ज्ञाने उद्योत सहाय। ज्ञाने थिविरपणु लहे रे, आचारज उवझाय रे, भ०॥३॥ ज्ञानी श्वासोश्वासमां रे, कठिन करम करे नाश। वह्नि जेम इन्धन दहे रे,

चरणमा च्योति प्रकाशो रे, भ० ॥४॥ प्रथम नान पछी दया रे, सवर मोह विनाश। गुणठाणेग पग थालीये रे, जेम चढे मोक्ष आवासी रे, भ०॥५॥ मइ सुत्र ओहि मणपज्जरा रे पंचम केवलनान। चउ मुगा श्रुत एक छे रे, स्व पर, प्रकाश निदानो रे, भ० ॥६॥ तेहना साधन जे कर्ह्या रे, पाटी पुस्तक आदि। लखे लखावे साचवे रे, धर्मी धर्मी अप्रमादी रे, भ०॥७॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, भणता करे अंतराय। अंधा बहेरा बोबडा रे, मुगा पागला थाय रे, भ० ॥८॥ भणता गुणता न आवडे रे, न मले वल्लभ चीज। गुणमजरी वरदत्त परे रे, ज्ञान विराधक बीज रे, भ० ॥९॥ प्रेमे पूछे परखदा रे, प्रणमी जग-गुरु पाय। गुणमजरी वरदत्तनो रे, कहो अधिकार पसायो रे, भ० ॥१०॥

॥ अष्टमी का स्तवन ॥

हारे मारे ठाम धरमना साडा पचवीश दश जो, दीप रे त्यां देश मगध सहुमा शिरे रे लोल। हा रे मारे नगरी तेहमा राजगृही सुविशेष जो, राजे रे त्यां श्रेणिक गाज गजा परे रे लोल ॥१॥ हा रे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो, विचरंता त्यां आवी वीर समोसर्या रे लोल हा रे मारे चउद सहस मुनिवरनो साथे साथ जो, सुधा रे तप संयम शियले अलकर्या रे लोल ॥२॥ हा रे मारे

फूल्या रसभर भूल्या अन कठय जो, जाणु रे गुणशील वन हसी रोमाचियो रे लोल । हां रे मारे वाया वाय सुवाय तीहा अनिलेंद्र जो, नासे रे परिमल चिहु पासे सचियो रे लोल ॥३॥ हा रे मारे देव चतुर्विध आवे कोडा कोड जो, त्रिगडु रे मणि हेम रजतनु ते रचे रे लोल । हा रे मारे चोसठ सुरपति सेवे होडाहोड जो, आगे रे रस लागे इद्राणी नचे रे लोल ॥ ४ ॥ हाँ रे मारे मणिमय हेम सिंहासन बेठा आप जो, ढाले रे सुर चामर मणिरत्ने जड्याँ रे लोल । हाँ रे मारे सुणतों दु दुभि नाद टले सवी ताप जो, वरसे रे सुर फूल सरस जानु अड्यॉ रे लोल ॥५॥ हाँ रे मारे ताजे तेजे गाजे घन जेम लु ब जो, राजे रे निलराज समाजे धर्मने रे लोल । हां रे मारे निरखी हरखी आवे जन मन लु ब जो, पोषे रे रस न पडे घोरे धर्मने रे लोल ॥ ६ ॥ हां रे मारे आगम जाणी जिननो श्रेणिक राय जो, आव्यो रे परिवरियो हय गय रथ पायगे रे लोल । हा रे मारे दह प्रदक्षिणा वदी बेठो ठाय जो, सुणवा रे जिनवाणी मोटे भागीये रे लोल ॥ ७ ॥ हा रे मारे त्रिभुवन नायक लायक नर भगवत जो, आणी रे जन करुणा धर्मकथा कह रे लोल । [illegible] रे मारे सहज विरोध विसारी जगना जतु जो, सुणवा रे जिनवाणी मनमां गहगहे रे लोल ॥ ८ ॥

॥ एकादशी का स्तवन ॥

समवसरण बेठा भगवत, धर्म प्रकाशे श्रीअरिहंत। बार परषदा बेठी रूडी, मागसिर शुदी अगीयारस वडी ॥ १ ॥ मल्लिनाथना त्रण कल्याण, जन्म दीक्षा ने केवलनाण। अरजिन दीक्षा लीधी रूडी, मागसिर शुदी अगीयारस वडी ॥ २ ॥ नमिने उपन्यु केवलज्ञान, पांच कल्याणक अति-प्रधान। ए तिथिनो महिमा वडी माग० ॥ ३ ॥ पांच भरत ऐरावत इमही ज, पांच कल्याणक हुए तिमही ज। पचासनी संख्या परगटी माग० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गणता एम, दोढसो कल्याणक थाय तेम। कुण तिथि छे ए तिथि जे वडी, माग० ॥ ५ ॥ अनंत चोवीशी इण परे गणो, लाभ अनंत उपवास तणो। ए तिथि सहु शिर ए वडी, माग ॥ ६ ॥ मौनतणे रह्या श्रीमल्लिनाथ, एक दिनम संयम त्रण साथ। मौन धरी परे त्रण इम पडी, माग० ॥ ७ ॥ आठ पहोरी पोसह लीजिए, चोविहार विधिशु कीजिए। एम प्रकार ने मौन घडी, माग० ॥ ८ ॥ वर्ष इग्यार कीजे उपवास, जाव जीव पण अधिक उल्लास। ए तिथि मोक्ष तणी पावडी, माग० ॥ ९ ॥ उजमणु कीज श्रीकार, ज्ञानोपगरण इग्यार इग्यार। करो काउस्सग्ग गुरु पाय पडी, माग० ॥ १० ॥ ओ स्नात्र कीजे वली, पोथी पूजिने मन रली। ... कीजे ...

॥ ११ ॥ मौन अग्यारस मोटु पर्व, आराध्यां सुख लहीये सर्व । त्रउ पचरराण करो आखडी, माग० ॥ १२ ॥ जेमल सोल इग्यारो समे, कीधु स्तवन सहु मन गमे । समयसुन्दर कहे दहाडी, माग० ॥ १३ ॥

॥ श्री वीश स्थानक स्तवन ॥

हारे मारे प्रणमु सरस्वती मागु वचन विलासजो, वीशरे तप स्थानक महिमा गाइशु रे लोल ॥ हारे मारे प्रथम अरिहत पद लोगस्स चोवीसजो, बीजेरे सिद्ध स्थानक पनर भावशु रे लोल ॥ १ ॥ हा० त्रीजे पवयणगुणशो लोगस्स सातजो, चउथेरे आयरियाणं छत्रीसनो सहीरे लोल ॥हा०॥ थेराण पद पचमे दस उदारजो, छठ्ठेरे उवज्झायाणं पचवीसनो सहीरे लोल ॥ २ ॥ हा० सातमे नमोलोए सव्वसाहु सत्तावीसनो, आठमे नमो नाणस्स पंच भावशु रे लोल ॥ हा० नवमे दरिसण सडसठ मनने उदारजो, दशमे नमो विणयस्स दस वखाणीएरे ॥ ३ ॥ हा० अगीआरमे नमो चारित्तस्स लोगस्स सत्तरजो, बारमे नमो बभस्स नवगुणे सहीरे लो० ॥ हा० ॥ कीरियाण पदतेरमे वली पचवीसजो, चउदमे नमो तवस्स बार गुणे सहीरे लो० ॥ ४ ॥ हा० पंदरमे नमो गोयमस्स अठावीसजो नमो जिणाय चउवीस गणशु सोलमेरे लो० ॥ सत्तरमे नमो चारित्र लोगस्स सित्तेर जो, नाणस्सनो पद गणशु पचावन

भडागेरे लो० ॥ ५ ॥ हां० श्रीगणीमे नमो सुभस्स नीम पीस्तालीसनो, चौमसे नमो तिजम्स वीस भाखरे लो० ॥ हां० तपनो महिमा चारसे उपर वीसनो, षटमासे एक श्रोली पूरी कीजियेरे लो० ॥ ६ ॥ हां० तब करतां वली गणीये देयद गात जो, नवकारवाली वीस स्थानक भाखरे लो० ॥ हां० प्रभावना सघ स्वामी वत्सल सारजो, उजमणा विधि कीजिए विनय लीजियेरे लो० ॥ ७ ॥ तपनो महिमा वली श्री वीर जिनरायजो, विस्तारे इम सबव गौतम स्वामिनेरे लो ॥ हां० तप करतां वली तीर्थंकर पद होयजो, दयगुण इम पाँचे स्तवन सोहामणोरे लो० ॥ ८ ॥

॥ श्री सिद्धचक्र स्तवन ॥

श्री श्री पालकुमार श्वेतवर्ण अरिहत आराधे, वीतराग आतम गुण साधे, अमृतदरा मल जार ॥ श्री १ ॥ सिद्ध शुद्ध परमात्मा ध्यावे, रक्तवर्ण आलंबन पावे, सिद्ध आठ गणधार ॥ श्री २ ॥ छत्तीस गुण आचारज सोहे, पीत वर्ण ध्याने मन मोहे, रुपर तारणहार ॥ श्री ३ ॥ पढ़े-पढ़ावे योग्य बनावे, नील वरण आतम गुण गावे पाठक पद श्रवधार ॥ श्री ४ ॥ पचम पद जो मोत से मजीए, श्याम वरण सब पाप जो तजीए, धन साधु अणगार ॥ श्री ५ ॥ दर्शन ज्ञान चरण तप धारे, श्वेतवर्ण साधन अरधारे निश्चय और व्यवहार ॥ श्री ६ ॥ सिद्धचक्र गुण गावे भावे, आतम लक्ष्मी-हर्ष मनावे, वल्लभ जय जयकार

॥ दीवाली स्तवन ॥

जयो जगस्वामी वीरजिनंद ॥ टेर ॥ नगर अपापा मैं प्रभु आये, भविजन को उपकार करद ॥ ज० १ ॥ निज निरवान समय को जानी, सोला पहर प्रभु धर्म कहद ॥ ज० २ ॥ कार्तिक वदि पद्रसरी राते, प्रात काल प्रभु मुक्ति लहद ॥ ज० ३ ॥ परमात्मा पद छिनक में लीनो, आठ कर्म को दूर हरद ॥ ज० ४ ॥ कल्याणक निर्वाण मोहत्सव, कारण मिलकर आये सुरींद ॥ ज० ५ ॥ पापा नगरी नाम कहायो, अस्त भयो जिहां भान जिनद ॥ ज० ६ ॥ नव मल्ली नव लेच्छी राजा, शोक अतिशय दिल में घरद ॥ ज० ७ ॥ भाव उद्योत गया अब जगसे, द्रव्य उद्योत को दीप करंद ॥ ज० ८ ॥ जिस कारण दीवाली होइ, ध्यान धरोप्रभु वीर जिनद ॥ ज० ९ ॥ कार्तिक सुदि एकम दिन आवे, गौतम केवल ज्ञान गहद ॥ ज० १० ॥ आतमराम परमपद पावे, वल्लभ चित्तमें हर्ष अमद ॥ ज० ११ ॥

॥ श्री सिद्धाचल जी का स्तवन ॥

जात्रा नवाणुं करीए, विमल गिरि जात्रा नवाणुं करीए। पुर्व नवाणुं वार शत्रुंजय गिरि, ऋषभजिणंद समोसरीए ॥ वि० ॥१॥ कोटि सहस्र भव पातक तुटे, शत्रुंजय सामाडग भरीए ॥ वि० ॥ २ ॥ सात छट दोय

अटम नवस्या कर्मा चढिए गिरिवरीए ॥ वि० या० ॥३॥ पु डरिक पद जपिए मन हरखे, अध्यवसाय शुभ धरीए ॥ वि० या० ॥४॥पापी अभव्य न नजर देखे हिंसक पण उद्धरीए ॥ वि० या० ॥५॥ भूमि संथारे ने नारी तणो संग, दूर थकी परी हरीए ॥वि० या० ॥६॥ एकल आहारी ने सचित्त परिहरी, गुरु साथ पद चारीए ॥वि० या० ॥७॥ पडिकमणा दोय विधिशु कराए, पापपडल परिहरीए ॥वि० या० ॥८॥ कलिकाले ए तीरथ मोटु, प्रवहण जेम भवदरीए ॥वि० या० ॥९॥ उत्तम ए गिरिवर सेवता पद्म कहे भव तरीए ॥ वि० या० ॥१०॥

पर्युषण पर्व की स्तुति

सत्तर भेदी जिन पूजा रचीने, स्नात्र महोत्सव कीजे जी । ढोल दमामा भेरी नफेरी, झल्लरी नाद सुणीजे जी ॥ वीर जिन आगल भावना भावी, मानव भव फल लीजे जी । पर्व पजुसण, पूरव पुण्य, आव्यां एम जाणीजे जी ॥१॥ मास पास वली दसम दुवालस, चत्तारि अट्ठ कीजे जी । उपर वली दश दोय करीने, जिन चोवीश पूजीजे जी ॥ वडा कल्पनो छट्ठ करीने, वीर वखाण सुणीजे जी । पडवेने दिन जन्म महोत्सव, धवल मंगल वरतीजे जी ॥२॥ आठ दिवस लगे अमर पलावी, अट्ठमनो तप कीजे जी । नागकेतुनी परे केवल लहीये, जो शुभ भाव

तेलाधर दिन त्रण कल्याणक, गणधरपाट वदीजे जी।
पाम नेमीसर अवर तीज, ऋषभ चरित्र सुणीज जी ॥३॥
बारसा सुत्र ने सामाचारी, सवच्छरी पडिकमिये जी।
चैत्य प्रवाडी विधिशु कीजे, सकल जतु खामीजे जी॥
पारणाने दिन स्वामीवत्सल, कीजे अधिक वडाई जी।
मानविजय कहे सकल मनोरथ, पूरे देवी सिद्धायी जी ॥४॥

दूज तिथि की स्तुति

दिन सकल मनोहर, बीज दिवस सुविशेष। राय राणा प्रणम, चन्द्र तणी जिहां रेख॥ तिहा चन्द्र विमाने, शाश्वता जिनवर जेह। हुं बीज तणे दिन, प्रणमु आणी नेह॥१॥ अभिनन्दन चन्दा, शीतल शीतलनाथ। अरनाथ सुमति जिन, वासुपूज्य शिव साथ॥ इत्यादिक जिनवर, जन्म ज्ञान निर्वाण। हुं बीज तणे दिन, प्रणमु ने सुविहाण॥२॥ परकाश्यो बीज, दुविध धर्म भगवत। जेम विमल कमल होय, विपुल नयन विकसत॥ आगम अति अनुपम, जिहां निश्चय व्यवहार। बीजे सवी कीजे, पातकनो परिहार॥३॥ गजगामिनी कामिनी, कमल सुकोमल चीर। चक्केसरी केसर, सरस सुगध शरीर॥ कर जोडी बीजे, हुं प्रणमु तम पाय। एम लब्धिविजय कहे, पूरो मनोरथ माय॥४॥

॥ पचमी की स्तुति ॥

श्रावण शुदि दिन पचमीये, जन्म्या नेमि जिणद तो।
श्याम शरीर तन शोभत ॥ मुख शरद को चद तो ॥

सहस वरस प्रभु आउखु ए, ब्रह्मचारी भगवत तो । अष्ट करम हले हणीए, पहोता मुक्ति महत तो ॥१॥ अष्टापद पर आदि जिन ए, पहोत्या मुक्ति मोझार तो । वासु पूज्य चंपापुरी ए, नेमि मुक्ति गिरनार तो ॥ पावापुरी नगरीमा वली ए, श्री वीर तणु निर्वाण तो । सम्मेतशिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिर वहुं तेहनी आण तो ॥२॥ नेमिनाथ ज्ञानी हुआ ए, भाखे सार वचन तो । जीव दया गुण वेलडी ए, कीजे तास जतन तो ॥ मृषा न बोलो मानवी ए, चोरी चित्त निवार तो । अनंत तीर्थंकर इम भणे ए, परिहरीये परनार तो ॥३॥ गोमुख नामे यक्ष भलो ए, देवी श्री चक्केश्वरी नाम तो । शासन मानिय ज [illegible] ए, कर [illegible] ग्राम तो ॥ तपगच्छ नायक गुणनीलो ए, श्री विजय [illegible] सूरिराय तो । ऋषभदास पाय सेवतां ए, [illegible] अवतार तो ॥४॥

अष्टमी की स्तुति

मगल आठ करी जस आगल, भाव [illegible]
आठ जातिना कलश भरीने, नवरावे [illegible]
वीर जिनेश्वर जन्म महोत्सव करता [illegible]
आठमनो तप करता अम घर, मंगल [illegible]
अष्ट करम वयरि गज गजन, अष्टा [illegible]
आठमे आठ सुरूप विचारी, म [illegible]
अष्टमी गति जे पहोंता जिनवर, [illegible]

आठमनो तप करतां अम घर, नित नित वाधे रंग जी ॥२॥
प्रातिहारज आठ बिराजे, समवसरण जिन राजे जा,
आठमे आठसो आगम भाखी, भवी मन संशय भाजे जी।
आठे जे प्रवचननी माता, पाले निरतिचारे जी।
आठमने दिन अष्ट प्रकारे, जीव दया चित धारे जी ॥३॥
अष्ट प्रकारी पूजा करीने, मानव भव फल लीजे जी,
सिद्धाई देवी जिनवर सेवी, अष्ट महासिद्धि दीजे जी।
आठमनो तप करतां लीजे, निर्मल केवलनाण जी,
धीरविमल कवि सेवक नय कहे, तपथी कोड़ कल्याण जी ॥४॥

एकादशी की स्तुति

एकादशी अति रूअडी, गोविंद पूछे नेम, कोण कारण ए पर्व महोटु, कहो मुजशु तेम। जिनवर कल्याणक अति घणा, एक सो ने पचास, तीणे कारण ए पर्व महोटु, करो मौन उपवास ॥१॥ अगीयार श्रावक तणी प्रतिमा, कही ते जिनवर देव, एकादशी एम अधिक सेवो, वनगजा जिम रेव। चोवीश जिनवर सयल सुखकर, जैसा सुरतरु चंग जेम गंग निर्मल नीर जेहवो, करो जिनशु रंग ॥२॥ अगीयार अंग लखावीये, अगीयार पाठा सार, अगीयार कवली वींटणा, ठवणी पुजणी सार। चाबखी चंगी विविध रंगी, शास्त्र तणे अनुसार, एकादशी एम उजवो, जिम पामीये भवपार ॥३॥ वर कमल नयणी कमल वयणी,

कमल सुकोमल गाय, सुन [illegible] [illegible]
ना सुख थाय । [illegible] एम मन [illegible]
शिष्य शासन [illegible] विघ्न निवारो [illegible]

सिद्ध चरणों [illegible]

॥ श्री वीश स्थानक पद की स्तुति ॥

पूछे गौतम वीर जिणंदा, समवसरण बैठा सुखकंदा, पूजित अमर सुरिंदा । कैम निकाचे पद जिनचंदा, किणविध तप करता भव फंदा, टले दुरित दंदा ॥ तव भाखे प्रभुजी गत निंदा, सुण गौतम वसुभूति नंदा, निर्मल तप अरविंदा । वीश स्थानक तप कर महंदा जिम तारक समुदाय चंदा, तिम ए तप सवि इंदा ॥१॥ प्रथम पदे अरिहंत भणीजे, बीजे सिद्ध पवयण पद त्रीजे, आचारज भज टरीजे । उपाध्याय ने साधु ग्रहीजे नाणदंसण पद विनय वहीजे, अगियारमे चारित्र लहीजे ॥ बंभवयचारित्र गणाय, किरियाण तवस्स करीजे, गोयम जिणाण दईजे । चारित्र नाण श्रुत तित्थस्स कीजे त्रीजे भव तप करत सुणीजे, ए सवि जिन पद लीजे ॥२॥ आदि 'नमो' पद सवजे ठवीश, बार पनर वली वार छत्तीश, दश पचवीश सगवीश, । पांच ने सडसठ तेर गणीश, सित्तेर नव किरिया पचवीश, बार अठ्ठावीश चोवीस ॥ सतरा एकावन पीस्तालीश पांच लोगस्स काउस्सग्ग रहीश, नवकारवाली वीश । एक एक पद उपवास ज वीश, मास छए एक ओली धरीश, एम सिद्धांत जगीश॥३॥ शक्ते एकासणु तिविहार, छठ्ठ अट्ठम मासखमण उदार, पडिक्कमणु दोय वार । इत्यादिक विधि सुखकर धार, एक पद आराधन भव पार, उजमणु विविध प्रकार ॥ मातंग

फल करे मनोहार, दर्दी सिद्धाइ शासन रखवाल, विघ्न मिटावण हार । श्रीमाणिविजय नम उपर प्यार, शुभ मतिपण धर्मी आधार, दीपविजय जयकार ॥४॥

दीवाली नी स्तुति

मनोहर मूर्ति महावीर तणी, जिणे सोल पहोर देशना पभणी । नव मल्ली नव लच्छी नृपति सुणी, कही शिव पाम्या त्रिभुवन धणी ॥१॥ शिव पहोता ऋषभ चउदश भक्त, बावीश लह्या शिव मास थित । छट्ठे शिव पाम्या वीर वली, कार्तिक वदी अमावस्या निर्मली ॥२॥ आगामी भावि भाव कह्या, दीवाली कल्प थी जेह लह्या । पुण्य पाप फल अज्झयणे कह्या, सवि अतिशय गुणने सद्दह्या ॥३॥ मंत्री देव मिली उद्योत कर, परभाते गौतम ज्ञान वर । ज्ञानविमल सद्गुरु विस्तरे, जिनशासनमां जयकार कर ॥४॥

श्री उपधान नी स्तुति ।

वीर जिनेश्वर उपदिशे ए, सांभलो चतुर सुजाण तो,
उपधान विना नवि कल्पे ए, गणवो श्री नवकार तो ।
गीतारथ गुरु योग थी ए, वहीए शुद्ध उपधान तो,
क्रियाकारी आलोयण ए, लहीए सुगुरु पास तो ॥१॥
पंच मंगलनुं[१] जाणीये ए, ए पहेलुं उपधान तो,
प्रतिक्रमणनुं[२] जाणीये ए, ए बीजुं उपधान तो ।

१ नवकार मन्त्र २ इरियावही

॥ श्री वीश स्थानक पद की स्तुति ॥

पूछे गौतम वीर जिणंदा, समवसरण बेठा सुखकंदा, पूजित अमर अरिंदा। केम निकाचे पद जिनचंदा, किणविध तप करता भव फंदा, टले दुरितह दंदा ॥ तव भाखे प्रभुजी गत निंदा, सुण गौतम वसुभूति नंदा, निर्मल तप अरविंदा। वीश स्थानक तप कर महदा जिम तारक समुदाये चंदा, तिम ए तप सवि इंदा ॥१॥ प्रथम पदे अरिहंत नमीजे, बीजे सिद्ध परवयण पद त्रीजे, आचारज थर ठवीजे। उपाध्याय ने साधु ग्रहीजे नाणदंसण पद विनय वहीजे, अगियारमे चारित्र लहीजे ॥ बंभवयधारिण गणीजें, किरियाणं तरस्स करीजे, गोयम जिणाणं लहीजे। चारित्र नाण सुअ तित्थस्स कीजें त्रीजे भव तप करत सुणीजें, ए सवि जिन तप लीजें ॥२॥ आदि 'नमो' पद सघले ठवीश, बार पनर दश बार छत्रीश, दश पणवीश सगवीश, । पांच ने सडसठ तेर गणीश, सित्तेर नव किरिया पचवीश, बार अट्ठावीश चोवीस ॥ सत्तर एकावन पीस्तालीश पांच लोगस्स काउस्सग्ग रहीश, नवकारवाली वीश। एक एक पद उपवास ज वीश, मास छए एक ओली करीश, एम सिद्धांत जगीश॥३॥ शक्ते एकासणु तिविहार, छट्ठ अट्ठम मासखमण उदार, पडिक्कमणु दोय वार। इत्यादिक विधि गुरुगम धार, एक पद आराधन भव पार, उजमणु विविध प्रकार ॥ मातंग

पम कर मनोहार, दवी सिद्धाइ शासन रखवाल, विघ्न मिटावरा हार। गीमाविजय गम उगर प्यार, शुभ भवियण धर्म आधार, रीतिविजय जयकार ॥४॥

दीवाली की स्तुति

मनोहर मूर्ति महावीर तणी, जिणे सोल पहोर देशना पभणी। नव मल्ली नव लच्छी नृपति सुणी, कही शिव पाम्या त्रिभुवन धणी ॥१॥ शिव पहोता ऋषभ चउदश भक्ते, बावीश लह्या शिव मास थिते। छट्ठे शिव पाम्या वीर वली, कार्तिक वदी अमावस्या निर्मली ॥२॥ आगामी भावी भाव कह्या, दीवाली कल्प जोइ लह्या। पुण्य पाप फल अज्झयणे कह्या, सवी तहत्ति करीने सद्दह्या ॥३॥ सवी देव मिली उद्योत कर, परभाते गौतम ज्ञान वर। ज्ञानविमल गुरु सिन्धुर, जिनशासनमां जयकार कर ॥४॥

श्री उपधान की स्तुति।

वीर जिनेश्वर उपदिशे ए, सांभलो श्रावक सुजाण तो,
उपधान विना नवि कल्पे ए, गणवो श्री नवकार तो।
गीतारथ गुरु योगथी ए, वहीए शुद्ध उपधान तो,
क्रियाखाना आलोयणा ए, लइये सुगुरु पास तो ॥१॥
पंच मंगलनुं १ जाणीये ए, ए पहेलुं उपधान तो,
प्रतिक्रमणनुं २ जाणीये ए, ए बीजुं उपधान तो।

१ नवकार मन्त्र २ इरियावही

चैत्य (स्तवनतु मानीय ए, ए चोथु उपधान तो,
सर्वी तीर्थंकर इम भखे ए, उपधान करो बहुमान तो ॥२॥

पूर्छे पु नस्वर मिद्धस्तव३ ए, छट्ठु वही उपधान तो
अमरगन्स्तवथु जाणीने ए घरीये ततीय ध्यान तो।
फरवानाम स्तव लोगस्सतु ए, पाचमु शुभ उपधान तो
निदा श्री महानिशीथ सूत्रमा ए, भाख्यु श्री जिनराज तो ॥३॥

धीश मद्य महोत्सव आदरीय ए, श्री गुरुरत्नी पास तो,
ए तंभाद् मडाणो ठाठमु ए, पधरावो जिनराज तो।
सिद्धश्रीफल द्रव्य चडावीयें ए, माणिक्यादि माग तो,
माधु वस्त्र दृष्टि सुरजर समी ए, वरी सिद्धार्थी महाय तो ॥४॥

लही

चैत्री पूनम री स्तुति ॥ॐ

गोयमु डरीकमडण पाय पाय प्रणमी जे, आदीश्वर जिन चढानी
त्रीजे नमि विना नेरीश तीर्थंकर, गिरि चढिया आणदा जी
आधिआगममहि पुडरीक महिमा, भाग्यो ज्ञान दिणदाजी
दश चैत्री पूनम दिन देवी चक्रेसरी, सौभाग्य द्यो सुरस्टाजी ॥१

मित्ते १ अरिहंत चेइयाणं० अन्नत्थ। २ पुक्खरवर। ३ सिद्धाणं
राजा(बुद्धाणं)। ४ नमुत्थुणं।

रहीश यह स्तुति (थुई) चार बार भी कह सकते हैं।

माम
शक्ते
परिघ
पट क्ष



त्रिकाल-देववन्दन विधि

सामायिक पौषध विधि सहित

—※※—

प्रथम लेनेवालों की शुभ नामावली।

		पुस्तकें
श्रीमान्	रूपचन्दजी मगनमलजी कोचर हैदराबाद	१२५
,,	लक्ष्मीचन्दजी पन्नालालजी फरमाबाद कलकत्ता	१२५
,,	हजारीमलजी मिलापचन्दजी रामपुरिया बीकानेर	४०
,,	इन्द्रचन्दजी मनरलालजी ढड्ढा बीकानेर	२०
,,	लक्ष्मीचन्दजी फतेहचन्दजी कोचर ,,	२०
,,	सेठ कालीदास जीवराज शाह पालनपुर	२०
,,	गौड़ीदासजी पारसदासजी ढड्ढा जयपुर	२०
,,	चांदमलजी रतनमलजी कोचर ,,	२०
,,	नेमचन्दजी प्रेमचन्दजी कोचर ,,	२०
,,	रतनचन्दजी हीराचन्दजी कोचर ,,	२०
,,	नौरतनमलजी ढड्ढा ,,	२०
,,	रूपचन्दजी भाहानाल प्रतापगढ़	२०

—०○०—